thearyasamaj.org

ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 10 अंक 35 25 सितम्बर से 01 अक्टूबर, 2014 दयानन्दाब्द 191 सृष्टि सम्वत् 1960853115 सम्वत् 2071 आ. शु. 01

आर्य समाज का सर्वोत्थान तथा उसे मजबूत बनाना हम सबका सम्मिलित दायित्व

– स्वामी आर्यवेश

आर्य समाज के सम्मानित संन्यासीगण, प्रबुद्ध विद्वत्जन और वाग्मी नेतागणों ने अधिवेशन में दिया प्रेरणादायक उद्बोधन

सार्वदेशिक सभा का दो-दिवसीय साधारण अधिवेशन नये आयाम स्थापित कर सफलता पूर्वक सम्पन्न

सार्वदेशिक सभा के साधारण अधिवेशन का ध्वजारोहण करके उद्घाटन करते हुए स्वामी धर्मानन्द जी, स्वामी आर्यवेश जी, श्री आनन्द कुमार आर्य जी, प्रो. विट्ठलराव आर्य जी, डॉ. अनिल आर्य, डॉ. ओम प्रकाश मान जी, आचार्य प्रेमपाल शास्त्री, स्वामी विजयवेश जी, स्वामी सच्चिदानन्द जी, चाँदमल सहित अन्य आर्य महानुभाव

दिल्ली 13 सितम्बर, 2014 आज यहाँ आर्य समाज शालीमार बाग (पश्चिम) दिल्ली में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ''दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 का दो दिवसीय साधारण अधिवेशन का प्रारम्भ आर्य जगत के तपोनिष्ठ संन्यासी स्वामी धर्मानन्द सरस्वती के द्वारा ओ३म् ध्वज फहराकर किया गया। इससे पूर्व आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान स्वामी चन्द्रवेश जी के ब्रह्मत्व में विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया। ध्वजारोहण के अवसर पर स्वामी धर्मानन्द जी ने अपने संक्षिप्त उद्बोधन में कहा कि आर्य समाज के रचनात्मक स्वरूप को निखारने के लिए इस अधिवेशन में यह ठोस निर्णय लेना होगा कि देश के प्रत्येक जिले में नई आर्य समाजों का गठन हो और इनके माध्यम से परिवारों को आर्य समाज के सिद्धान्तों और मन्तव्यों के बारे में बताया जाये और आर्य समाज में युवा शक्ति को लाने का प्रयास किया जाये। युवाओं के चारित्रिक विकास के लिए शिविर लगाये जायें तथा हर सम्भव प्रयास किये जायें जिससे युवाओं को साथ लेकर समग्र समाज में धार्मिक क्रांति एवं सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए एक प्रशस्त पथ का निर्माण हो सके।

ध्वजारोहण के उपरान्त आर्य समाज शालीमार बाग के ओ३म् ध्वजों से सुसज्जित विशाल सभागार में बनाये गये आकर्षक मंच पर आर्य जगत के प्रतिष्ठा प्राप्त संन्यासीगण, विद्वानों तथा आर्य नेताओं ने अपना स्थान ग्रहण किया। सारा सभागार देश के विभिन्न

thearyasamaj.org

सार्वदेशिक सभा का दो-दिवसीय साधारण अधिवेशन

प्रान्तों से आये आर्य प्रतिनिधियों, विशिष्ट अतिथियों तथा कर्मठ कार्यकर्ताओं से खचाखच भरा था। इस अवसर पर पंजाब, हरियाणा, चण्डीगढ़ उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, मध्य प्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़, उड़ीसा, महाराष्ट्र, आन्ध्र प्रदेश, गुजरात, दिल्ली, बंगाल, झारखण्ड, कर्नाटक, तमिलनाडु, मध्य भारत विदर्भ सहित देश के 19 प्रान्तों के अधिकारी, प्रतिनिधि, उच्चकोटि के विद्वान तथा कार्यकर्ता उपस्थित थे।

अधिवेशन में पधारकर कार्यक्रम की गरिमा बढ़ाने वालों में मुख्य रूप से आर्य जगत के तपोनिष्ठ संन्यासी स्वामी धर्मानन्द सरस्वती-उड़ीसा, गुरुकुलों तथा आर्ष शिक्षा को समुन्नत करने में प्राणपण से जुटे प्रतिष्ठित संन्यासी स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, वैदिक शिक्षा के प्रचार-प्रसार में संलग्न स्वामी ओमानन्द, हरियाणा में अपनी विशेष छाप छोड़ने वाले स्वामी श्रद्धानन्द, स्वामी विश्वानन्द, स्वामी सच्चिदानन्द, तपोनिष्ठ त्यागी संन्यासी आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान स्वामी रामवेश, स्वामी सोम्यानन्द सरस्वती, योग विद्या के स्तम्भ स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती, सार्वदेशिक सभा के कार्यकारी प्रधान श्री सत्यव्रत सामवेदी, आर्य जगत के प्रकाण्ड विद्वान आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय, आचार्य बलदेव पक्ष के कार्यकारी प्रधान श्री आनन्द कुमार आर्य, सार्वदेशिक न्याय सभा के प्रधान श्री आर. एस. तोमर एडवोकेट, प्रसिद्ध विद्वान एवं सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान आचार्य प्रेमपाल शास्त्री, आन्ध्र प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान तथा सार्वदेशिक सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य, आर्य समाज दीवान हाल के मंत्री डॉ. रविकान्त, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डॉ. ओम प्रकाश मान तथा मंत्री श्री बलजीत आर्य, प्रसिद्ध आर्य नेता एवं सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान वैद्य इन्द्रदेव, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान डॉ. अनिल आर्य, सार्वदेशिक सभा के उपमंत्री सर्वश्री महेन्द्र सिंह शास्त्री, सदाविजय आर्य, गोविन्द सिंह भण्डारी, मधुर प्रकाश शास्त्री, रामसिंह आर्य-राजस्थान, सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी, डॉ. जय प्रकाश भारती, उत्तर प्रदेश, आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार के प्रधान भूपनारायण शास्त्री, रामानन्द आर्य-बिहार, आर्य कुमार ज्ञानेन्द्र-उड़ीसा, रमाकान्त सारस्वत-उ. प्र., जय नारायण आर्य-मध्य प्रदेश विदर्भ, डॉ. चन्द्रैय्या जी-आन्ध्र प्रदेश, भानु प्रकाश शास्त्री-इन्दौर, कमल आर्य-नागदा, महेन्द्र भाई-दिल्ली, ब्र. राकेश, नैष्ठिक ब्रह्मचारी प्रवीण कुमार-उड़ीसा, विद्यासागर, श्रीमती गायत्री मीना-नोएडा, पूर्व महापौर माता शकुन्तला आर्या, बेटी बचाओ अभियान की अध्यक्षा कु. पूनम आर्या, कु. प्रवेश आर्या, चन्द्रपाल शास्त्री-गाजियाबाद, हीरा प्रसाद शास्त्री, नरेन्द्र वेदालंकार एवं गवेन्द्र शास्त्री-दिल्ली, सत्यपाल शास्त्री-हरियाणा, दयाराम काण्डपाल-अल्मोड़ा, धर्मपाल सिंह एडवोकेट, चिड़ावा राजस्थान, आचार्य सत्यवीर योगी, डॉ. कमल नारायण आर्य-छत्तीसगढ़, डॉ. रवि प्रकाश-दिल्ली, डॉ. मोक्षराज-अजमेर, श्री दिनेश आर्य मंत्री उत्तराखण्ड, श्री केशव सिंह, मध्य भारत आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री, मध्य प्रदेश विदर्भ के प्रधान प्रभाशंकर तिवारी, वरूण विहारी, झारखण्ड आर्य प्रतिनिधि सभा रांची, शंभा जी पंवार-महाराष्ट्र, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधाान अश्विनी कुमार शर्मा एवं मंत्री श्री ओम प्रकाश आर्य, प्रसिद्ध विद्वान् सुरेन्द्र सिंह कादियान, आचार्य सन्तराम अन्तरंग सदस्य, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के अध्यक्ष ब्र. दीक्षेन्द्र, श्री लक्ष्मण सिंह, श्री सोमदत्त शास्त्री-चण्डीगढ़, स्वामी अशोकानन्द, स्वामी सुरेन्द्रानन्द, किशन लाल, हरिशंकर अग्निहोत्री, युवा नेता योगेश आत्रेय, दर्शन अग्निहोत्री-दिल्ली सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति तथा कार्यकर्ता उपस्थित थे। सम्पूर्ण कार्यक्रम की अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने की तथा संयोजन सभामंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी ने किया।

सर्वप्रथम दिवंगतजनों को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए 2 मिनट का मौन रखा गया तदुपरान्त सभामंत्री **प्रो. विट्ठलराव आर्य जी** ने 1 अप्रैल, 2008 से 31 मार्च 2014 तक का आडिट किया हुआ विवरण तथा सभा द्वारा उक्त समयावधि में की गई गतिविधियों की जानकारी तथा गत अन्तरंग सभा की कार्यवाही पढ़कर सुनाई जिसे सर्व सम्मति से पास किया गया। प्रो. विट्ठलराव जी ने सार्वदेशिक सभा संचालन समिति के कार्यकाल में हुए विभिन्न आयोजनों तथा किये गये एकता प्रयासों का विवरण सदन को दिया। मंत्री जी ने स्वामी अग्निवेश जी के कार्यकाल के मुख्य बिन्दुओं पर प्रकाश डालते हुए 2 जुलाई,

2014 को उनके त्यागपत्र देने का विवरण भी सभा को सुनाया। उन्होंने सदन को यह भी बताया कि स्वामी अग्निवेश जी द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय गतिविधियों में संलग्न रहने के कारण चाहते हुए भी सभा को यथोचित समय नहीं दे पाने के कारण स्वामी आर्यवेश जी को सभा प्रधान बनाने का प्रस्ताव रखा गया और उसे सहर्ष सर्वसम्मति से सदन ने स्वीकार कर लिया। 23 अगस्त, 2014 को हुई अन्तरंग सभा की बैठक में स्वामी आर्यवेश जी के प्रधान नियुक्त किये जाने की सम्पुष्टि की भी सूचना उन्होंने दी। प्रो. साहब ने आर्य समाज को गति प्रदान करने तथा पूरे देश में जागरूकता पैदा करने के उद्देश्य से बनाई गई विभिन्न समितियों की जानकारी भी सभा को दी तथा हाथ उठवाकर सभी निर्णयों की सम्पुष्टि भी करवाई।

सभामंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी द्वारा समस्त गतिविधियों की जानकारी देने तथा उसकी सदन में सम्पुष्टि कराये जाने के उपरान्त युवा हृदय सम्राट तथा सार्वदेशिक सभा के यशस्वी प्रधान **स्वामी आर्यवेश जी** ने भूमिका उद्बोधन में आर्य समाज की वर्तमान स्थिति, व्यक्ति के आन्तरिक विकास, समाज में चहुंमुखी विकास, प्रान्तीय सभाओं के संगठन, राष्ट्र की ज्वलन्त समस्याओं, सैद्धान्तिक विषयों व समयबद्ध भावी कार्यक्रमों की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए कहा कि आज इस अधिवेशन में पूरे देश से पधारे आप सब महानुभावों की भारी संख्या को देखकर मेरा आत्मविश्वास और उत्साह अत्यन्त बढ़ गया है और मैं विश्वास पूर्वक कह सकता हूँ कि आर्य समाज का भविष्य पूरी तरह सुरक्षित है। स्वामी जी ने अन्धविश्वास, जातिवाद, भ्रष्टाचार, कन्या भ्रूण हत्या जैसी कुरीतियों को जड़मूल से उखाड़ फेकने का आह्वान किया। उन्होंने नारी शिक्षा पर बल देते हुए नैतिक मूल्यों में आ रही गिरावट पर भी चिन्ता प्रकट की तथा आर्य समाज में फैली गुटबाजी व फूट का संकेत करते हुए उन्होंने कहा कि एकता में ही बल है और परिस्थितियों की यह मांग है कि आर्य समाज में फैली इस फूट को दूर किया जाये। स्वामी जी ने कहा कि मैं जहां कहीं भी कार्यक्रमों में जाता हूँ तो कार्यकर्ताओं की ओर से एक मांग अवश्य रखी जाती है कि इस विघटन को किसी तरह दूर किया जाये। आर्य समाज का प्रत्येक निष्ठावान कार्यकर्ता इस विघटन से अत्यन्त दुखी है तथा उनकी इच्छा है कि किसी भी तरह आर्य समाज में एकता लाई जाये। मेरी आप सबसे अपील है कि आप सब अपने-अपने स्तर पर प्रयास करें तथा दबाव बनायें ताकि जो लोग इसमें बाधा बन रहे हैं उन्हें भी इस भावना का अहसास हो। स्वामी जी ने कहा कि आप सब महानुभावों ने हमारे ऊपर जो विश्वास व्यक्त किया है और अत्यन्त गरिमामय पद भार मेरे कन्धों पर डाला है उस पर खरा उतरने का मैं पूरा प्रयास करूँगा।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने वेद आधारित विचारों, समाज के सर्वांगीण हित तथा मानव मात्र के कल्याण के लिए आर्य समाज की स्थापना की थी और देश में फैले आडम्बर, अन्धविश्वास, पाखण्ड और कुरीतियों से लड़ना मुख्य उद्देश्य बनाया था। लेकिन आर्य समाज को स्थापित होने के इतने वर्षों के बाद भी स्थिति पहले से कहीं अधिक जटिल हो गई है। चारो

सार्वदेशिक सभा का दो-दिवसीय साधारण अधिवेशन

तरफ जातिवाद, साम्प्रदायिकता, भ्रष्टाचार, नशाखोरी, पाखण्ड, शोषण और नारी उत्पीड़न का बोलबाला है सारे देश की नजरें आर्य समाज के ऊपर टिकी है क्योंकि आर्य समाज के ही पास वैचारिक और आध्यात्मिक दृष्टि है जो उपर्युक्त परिस्थितियों से समाज को निकाल सकती है। स्वामी जी ने कहा कि मेरा यह दायित्व बनता है कि आप सबके सहयोग से भरसक प्रयास करके आर्य समाज को उसी गौरवपूर्ण स्थिति में पहुँचाऊँ जिसके लिए वह जाना जाता है। मेरा आप सभी से विनम्र निवेदन तथा आह्वान है कि हम सभी को एक दूसरे के प्रति सम्मान, सद्भाव और विश्वास रखते हुए महर्षि दयानन्द के मिशन को आगे बढ़ाना है। किसी भी प्रकार के विवाद से परे होकर हम सब आर्य समाज को गति प्रदान करने में जुट जायें। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप सभी पूर्ण निष्ठा और परिश्रम से आर्य समाज के कार्य में प्राणपण से जुटेंगे और आर्य समाज को पहचान दिलाने में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे।

स्वामी जी के भूमिका उद्बोधन के उपरान्त सारे देश के विभिन्न क्षेत्रों से आये पूज्य संन्यासियों, प्रतिष्ठित विद्वानों तथा आर्य नेताओं के स्वागत सम्मान का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। इस अवसर पर स्वामी धर्मानन्द जी, स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी अग्निवेश जी, स्वामी दिव्यानन्द जी का उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों ने पुष्पमाला तथा ओ३म् पट् पहनाकर स्वागत किया। इसी क्रम में न्याय सभा के अध्यक्ष श्री आर. एस. तोमर, आचार्य बलदेव पक्ष के कार्यकारी प्रधान श्री आनन्द कुमार, श्री नरेन्द्र सुमन आर्य, गुरुकुल आमसेना के ब्रह्मचारी, श्री राकेश तथा नैष्ठिक ब्रह्मचारी प्रवीण सहित कई अन्य आर्य नेताओं तथा कार्यकर्ताओं का स्वागत तथा सम्मान पुष्पमाला तथा ओ३म् पटका पहनाकर किया गया।

स्वागत के उपरान्त प्रसिद्ध समाजसेवी तथा क्रांतदर्शी संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी ने अभिभूत होकर अपने ओजस्वी तथा भावपूर्ण उद्बोधन में कहा कि आप लोग मेरा स्वागत करना चाहते हैं तो जैसे मैं कहूँ वैसे स्वागत करें। उन्होंने स्वामी आर्यवेश जी को इंगित करते हुए कहा कि जिन्हें आप सब लोगों ने अत्यन्त उत्साह से प्रधान बनाया है स्वागत उनका होना चाहिए। उन्होंने कहा कि आप सब स्वामी आर्यवेश जी का स्वागत करें वही मेरा सम्मान होगा। स्वामी जी ने कहा कि विगत वर्षों में मैंने जो आर्य समाज की सेवा की है, आन्दोलन किये हैं और आर्य समाज के विघटन को दूर करने के लिए जो प्रयास किये हैं वे सब आपके सामने हैं पिछले दस वर्षों से मैं सभा का प्रधान बना हुआ था मैंने सोचा कि अब यह जिम्मेदारी किसी युवा व्यक्ति को सौंप देनी चाहिए और बहुत चिन्तन करने के बाद मैंने स्वामी आर्यवेश जी को इस पद के लिए सबसे योग्य पात्र समझा और स्वामी आर्यवेश जी को प्रधान बनाने का प्रस्ताव गत अन्तरंग में रखा जिसे आप लोगों ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। इस गरिमामय पद की जिम्मेदारी निभाने की योग्यता स्वामी आर्यवेश जी में है और वे प्राणपण से इसे वहन करने में सक्षम हैं। मेरा सबसे अनुरोध है कि पूरा आर्य समाज अपने सारे मतभेदों को भुलाकर स्वामी आर्यवेश जी का सहयोग करें। स्वामी जी ने कहा कि मैं श्री विनय आर्य और धर्मपाल आर्य से भी अपील करता हूँ कि वे स्वामी जी के साथ आयें और एकजुट होकर आर्य समाज का कार्य करें। उन्होंने कहा कि मैं स्वामी आर्यवेश जी में स्वामी इन्द्रवेश जी की छवि को देखता हूँ। स्वामी जी ने स्वामी आर्यवेश जी का ओ३म् पटका पहनाकर स्वागत किया। इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी का स्वागत करने के लिए होड़ सी मच गई। सभा में उपस्थित प्रत्येक महानुभाव स्वामी जी का स्वागत करना चाहता था। श्री अनिल आर्य, वैद्य इन्द्रदेव, श्री आर. एस. तोमर, स्वामी सोम्यानन्द, डॉ. जय प्रकाश भारती सहित देशभर से आये विभिन्न प्रान्तों के समस्त अधिकारियों तथा गणमान्य व्यक्तियों ने स्वामी आर्यवेश जी का माल्यार्पण तथा ओ३म् पटका पहनाकर अत्यन्त उत्साह से स्वागत किया।

इस अवसर पर गुरुकुलों के माध्यम से समाज सेवा करने वाले तथा सारे देश में गुरुकुलों का जाल बिछा देने वाले **स्वामी प्रणवानन्द जी** ने अपने उद्बोधन में कहा कि समाज में दो प्रकार के व्यक्ति हुआ करते हैं एक तो वे जो पदों पर आने पर गौरवान्वित होते हैं और दूसरे वे जिनके आने से पद गौरवान्वित होता है। स्वामी आर्यवेश जी दूसरी श्रेणी के व्यक्ति हैं जिनके सार्वदेशिक सभा के प्रधान पद पर विराजमान होने से सभा प्रधान का पद गौरवान्वित हुआ है। उन्होंने कहा कि धार्मिक क्षेत्र में उन व्यक्तियों की आवश्यकता है जिनसे पदों की गरिमा बढ़े। उन्होंने इतिहास का दिग्दर्शन कराते हुए कहा कि हम इतिहास को पलट कर देखें तो स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपत राय जैसे अनेकों व्यक्ति हुए हैं जिनके पदारूढ़ होने से आर्य समाज गौरवान्वित हुआ है। स्वामी जी ने कहा कि आज उल्टा हो रहा है पदों को लेकर झगड़े हो रहे हैं। मैं कहता हूँ कि आप अपने कार्यों के द्वारा आर्य समाज का गौरव बढ़ायें। स्वामी जी ने पूर्व प्रधान स्वामी अग्निवेश जी की चर्चा करते हुए कहा कि स्वामी जी का सारा जीवन संघर्ष, तपस्या और त्याग का जीवन है उन्होंने अपने पद को छोड़कर स्वेच्छा से स्वामी आर्यवेश जी को प्रधान पद सौंप दिया जिससे सारे आर्य जगत में स्वामी अग्निवेश जी का कद बहुत बढ़ गया है। उन्होंने कहा कि आज अत्यन्त कर्मठ और दूरदर्शी व्यक्ति स्वामी आर्यवेश जी हमारे नेता हैं तो आर्यों जागो, उठो और स्वामी आर्यवेश जी के कन्धे से कन्धा मिलाकर उनका सहयोग करो, जहालत और

कमजोरी को निकालो, जो अच्छा कार्य करे उसे अच्छा मानो और जो बुरा काम करे उसे गलत मानो। अपनी शक्ति को बढ़ाओ और आर्य समाज के लिए कुछ कर गुजरो। उन्होंने अपने समस्त गुरुकुलों व हजारों विद्यार्थियों व अध्यापकों की ओर से शुभकामना एवं सहयोग की घोषणा की।

इस अवसर पर उड़ीसा जैसे पिछड़े क्षेत्रों में सेवा करने में अपने जीवन को समर्पित करने वाले **स्वामी धर्मानन्द जी** ने अपने उद्बोधन में कहा कि मैं यहाँ स्वागत कराने नहीं आया हूँ। उन्होंने कहा कि आर्य समाज आज कठिन परिस्थितियों में फंसा हुआ है और यह परिस्थितियाँ किसी बाहर वाले ने पैदा नहीं की है यह सब हमारे अपनों के कारण हो रहा है। आज आर्य समाज के संगठन को मजबूत करने की आवश्यकता है। स्वामी जी ने कहा कि मैं वैदिक धर्म का प्रचारक हूँ और सारे देश में वैदिक धर्म को स्थापित करना चाहता हूँ। जो व्यक्ति समाज सेवा में जुट जाता है उसके लिए अपमान, सम्मान कोई मायने नहीं रखता। स्वामी जी ने अपील की कि प्रत्येक व्यक्ति को स्वाध्याय करना चाहिए और महापुरुषों के जीवन चरित्र पढ़ने चाहिए। आपको पता चलेगा कि पहले लोग सिद्धान्तों के लिए लड़ते थे लेकिन आज पदों के लिए लड़ रहे हैं। स्वामी जी ने चेतावनी दी कि यदि पदों के लिए लड़ोगे तो नष्ट हो जाओगे। स्वामी धर्मानन्द जी ने स्वामी आर्यवेश जी के व्यक्तित्व की चर्चा करते हुए कहा कि मैं स्वामी आर्यवेश जी से बहुत प्रभावित हूँ। उन्होंने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी ने सबको जोड़ने का बहुत प्रयास किया लेकिन वे सफल नहीं हो सके लेकिन मुझे पूर्ण विश्वास है कि स्वामी आर्यवेश जी यह कार्य कर दिखायेंगे। स्वामी जी ने कहा कि मैं किसी पक्ष का नहीं हूँ, मैं सबको मिलाने आया हूँ। स्वामी जी ने कहा यहाँ से सब संकल्प लेकर जायें कि हम पदों के लिए नहीं लड़ेंगे और आवश्यकता पड़ी तो पद छोड़कर भी आर्य समाज का कार्य करेंगे।

इस अवसर पर आचार्य बलदेव पक्ष के कार्यकारी प्रधान **श्री आनन्द कुमार आर्य** ने कहा कि मैं आर्य समाज का सेवक हूँ तथा 1969 से आर्य समाज की सेवा कर रहा हूँ। उन्होंने कहा कि मेरी हार्दिक इच्छा है कि संगठन मजबूत हो और मैं इसके लिए निरन्तर प्रयासरत हूँ। सार्वदेशिक सभा एक होनी चाहिए और स्वामी आर्यवेश जी के नेतृत्व में एकता प्रयास हेतु सभी को बढ़-चढ़कर कार्य करना चाहिए। हमें पद की कोई इच्छा नहीं है मैं चाहता हूँ कि सभी लोग त्याग भावना से महर्षि के कार्य को आगे बढ़ायें। उन्होंने कहा कि हम सबको मिलकर एकीकरण का प्रयास करना होगा। जजों का सिस्टम समाप्त होना चाहिए इस प्रक्रिया से कुछ हासिल होने वाला नहीं है।

आर्य जगत के प्रकाण्ड विद्वान **आचार्य श्री वेद प्रकाश श्रोत्रिय** ने अपने चिर-परिचित अन्दाज में प्रेरणादायक ओजस्वी उद्बोधन प्रदान किया। उन्होंने कहा कि स्वामी आर्यवेश जी के द्वारा प्रधान का पद सम्भालने के साथ ही आर्य समाज ने अंगड़ाई ली है और आप सब उसे उठाने में अपना सहयोग प्रदान करेंगे। उन्होंने आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द का गुणगान करते हुए कहा कि सृष्टि के पुण्य प्रवाह से लेकर महाभारत के अन्त तक महर्षि के तुल्य कोई नहीं हुआ। उन्होंने सृष्टि के आदि से प्रारम्भ करके ऋषियों के जन्म लेने की प्रक्रिया का रहस्य खोलते हुए अप्रतिम प्रतिभा का दिग्दर्शन कराते हुए श्रोताओं को रोमांचित कर दिया। श्रोत्रिय जी ने अपने धारा प्रवाह उद्बोधन में कई ऐसे रहस्योद्घाटन किये जिनसे श्रोता मन्त्रमुग्ध होकर लाभान्वित हुए। उन्होंने हृदय की पीड़ा को व्यक्त करते हुए अत्यन्त मार्मिक होकर कहा कि महर्षि दयानन्द को पाकर सारी धरती धन्य हो गई, दयानन्द तुम अद्भुत थे असाधारण प्रतिभा के धनी थे, सारी दुनियाँ ने ऋषि की बात मानी लेकिन हम ऋषि के भक्त महर्षि की कोई बात नहीं मान रहे हैं। उन्होंने आर्यों को सचेत करते हुए कहा कि आप सबको ऋषि के खूंटे से बंधना होगा और आप सब यहाँ संकल्प लें कि हम सब दयानन्द के स्वप्न को साकार करेंगे और दयानन्द के मार्ग को छोड़कर कहीं नहीं जायेंगे। उन्होंने कहा कि जो आर्य समाज का नहीं हुआ वो किसी का नहीं हो सकता। श्री श्रोत्रिय जी ने कहा स्वामी आर्यवेश जी के रूप में आर्य समाज को एक हीरा प्राप्त हुआ है इनके द्वारा आर्य समाज में नव-चेतना जगेगी और आर्य समाज में नव-विद्युत प्रवाह लाने के लिए आप सबको स्वामी जी का तन-मन-धन से सहयोग करना होगा। आज जो अनर्थ हो रहा है वह आपके अर्थ देने से हर कार्य को करने में समर्थ हो जायेगा तो आर्थिक सहयोग भी करें क्योंकि बिना धन के कोई कार्य नहीं हो सकता। श्रोत्रिय जी ने कहा कि यहाँ से सब संकल्प लेकर जायें कि आर्यवेश जी जैसे महान व्यक्तित्व को मानसिक और आर्थिक सहयोग करेंगे तथा सब एकनिष्ठ होकर कार्य करेंगे।

इस अवसर पर अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आर्य संन्यासी तथा सभा के पूर्व प्रधान **स्वामी अग्निवेश जी** ने संगठन सूत्र के दो मंत्रों का पाठ करते हुए अपने उद्बोधन में आज की ज्वलन्त समस्या मांसाहार तथा गो-हत्या के विषय में चौंकाने वाली जानकारी दी उन्होंने मांस के लिए पशुओं की बर्बरतापूर्ण नृशंस हत्या के रोंगटे खड़े कर देने वाले विवरण सदन के सामने रखे। उन्होंने कहा कि गोहत्या बन्द कराने के लिए मोदी सरकार से मांग की जायेगी तथा आन्दोलन चलाया जायेगा। उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा कि इसे सम्प्रदायवाद से नहीं जोड़ना है। क्योंकि इस नृशंस कारोबार के लिए सब जिम्मेदार हैं। यदि हिन्दू गाय नहीं बेचें तो वह कटेगी कैसे। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने केवल गोहत्या की बात नहीं की अपितु किसी भी पशु पक्षी की हत्या न होने देने की बात की। उन्होंने सदन को एक आडियो क्लिप भी सुनाया जिसमें मोदी जी ने लोकसभा चुनाव के दौरान पशु हत्या के विरुद्ध अपने विचार रखे थे और इसके लिए कांग्रेस सरकार को जिम्मेदार ठहराया था। स्वामी जी ने स्मरण दिलाया कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने गो आदि पशुओं की हत्या न करने की बात की है। स्वामी जी ने बताया कि सारे पशु पक्षी मानव जीवन के लिए अत्यन्त आवश्यक हैं प्रत्येक का जीवन एक दूसरे पर निर्भर है। छोटे से छोटे जीव का लोप होना मनुष्य जीवन के लिए घातक है। स्वामी जी ने बताया सारे देश में शराबबन्दी के लिए विशाल स्तर पर आन्दोलन किया जायेगा। उन्होंने बताया देश के नौ मुख्यमंत्रियों से मेरी बात हो गई है वे सब शराब बन्द कराने के

thearyasamaj.org

सार्वदेशिक सभा का दो-दिवसीय साधारण अधिवेशन

पक्षधर हैं।

स्वामी जी ने बताया कि 21 सितम्बर, 2014 को विश्व शान्ति दिवस है और संयोग से 21 सितम्बर को मेरा जन्म दिवस भी है। मैं अपना जन्म दिवस किसी न किसी मुद्दे को लेकर विशेष रूप से मनाता हूँ। इस बार गो-हत्या तथा मांसाहार के विरुद्ध जन्तर-मन्तर पर विशाल प्रदर्शन तथा सारे दिन उपवास रखकर जन्म दिवस मनाया जायेगा। इस अवसर पर विभिन्न मतों के धर्माचार्य, विभिन्न संस्थाओं के अधिकारी तथा कार्यकर्ता भारी संख्या में उपस्थित रहेंगे। आप सब उसमें आमंत्रित हैं। स्वामी जी ने कहा हमारे सामने बहुत बड़ी चुनौती है। सारे देश में तथा विश्व में वैचारिक क्रांति लाने के लिए टी. वी. चैनल का होना अत्यन्त आवश्यक है इस पर गम्भीरता से विचार चल रहा है। उन्होंने संगठनात्मक एकता पर बल देते हुए सभी पक्षों को साथ लेकर चलने की बात कही। स्वामी जी ने सर्वशक्तिमान एकेश्वर की धारणा को लेकर चलने की बात पर बल देते हुए कहा कि इससे विश्व में बहुत बड़ा कार्य हो सकता है। दुनिया की बड़ी-बड़ी सभाओं में जाकर हमने अनुभव किया है कि लोग हमारी मान्यताओं से आश्चर्य चकित हैं। एक ईश्वर की अवधारणा से सत्य, प्रेम, करूणा, न्याय की प्रचण्ड ताकत पैदा हो जायेगी। स्वामी जी ने कहा कि हम ईश्वर का कार्य कर रहे हैं अत: कर्ताभाव, भोक्ता भाव और दृष्टाभाव तीनों का समन्वय लेकर चलें तो ईश्वर हमारी सहायता करेगा।

इस अवसर पर सभामंत्री **प्रो. विट्ठलराव आर्य** ने सार्वदेशिक सभा की ओर से कुछ प्रस्ताव पढ़कर सुनाये जिनसे आर्य समाज के कार्यों को गति प्रदान की जा सके। प्रस्ताव प्रस्तुत करने के बाद सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने सदन से निवेदन किया कि आपने समस्त प्रस्ताव सुन लिये हैं यदि कोई सदस्य इन प्रस्तावों में संशोधन कराना चाहता है या अन्य कोई प्रस्ताव देना चाहता है तो उसे आप लोग सदन के सामने प्रस्तुत कर सकते हैं। प्रस्ताव इसी अंक में अन्यत्र प्रकाशित किये जा रहे हैं।

सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष तथा प्रसिद्ध वैदिक विद्वान **पं. माया प्रकाश त्यागी जी** ने अपने उद्बोधन में कहा कि ऋषिवर देव दयानन्द को सबसे ज्यादा किसी से प्रेम था तो वह वेद थे। उन्होंने वेदों की ओर लौटने का उद्घोष किया था। उन्होंने बताया कि स्वामी आर्यवेश जी के प्रयासों से सार्वदेशिक सभा वेदों का पुन: प्रकाशन करने जा रही है। बहुत सुन्दर कागज और बहुत कम कीमत में यह वेद आम जनता को प्राप्त कराये जायेंगे। उन्होंने अपील की कि अधिक से अधिक अग्रिम राशि भेजकर आप सब वेद सैट बुक करवायें तथा औरों को भी प्रेरित करें। उन्होंने कहा कि स्वामी जी ने घर-घर वेद पहुंचाने के लिए इस वर्ष 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना बनाई है आप सब उसमें सहयोग दें। त्यागी जी ने एक वेद मंत्र की व्याख्या करते हुए कहा कि मनुष्य को ऐसे कार्य करने चाहिए जिससे वह सबका प्यारा बन जाये। उन्होंने देव की परिभाषा बताते हुए कहा कि जो सुख दे वही देव है। संन्यासी भी देव होता है। त्यागी जी ने स्वामी आर्यवेश जी द्वारा एकता प्रयास किये जाने की प्रशंसा करते हुए कहा कि आर्यों में एकता होना अत्यन्त आवश्यक है हम सब मिलकर आर्य समाज का कार्य करें इससे अच्छी बात कोई नहीं हो सकती। उन्होंने कहा कि मुझे पद का कोई मोह नहीं है जिसे पद चाहिए वह ले ले लेकिन एक होकर कार्य करें। उन्होंने हृदय की वेदना प्रकट करते हुए कहा कि हमारी फूट के कारण आर्य समाज का नाम धूमिल हो रहा है उन्होंने कहा हमारे द्वारा किये गये शुभ-अशुभ कर्मों का फल निश्चित रूप से मिलेगा अत: अच्छे कार्य करो और अपने जीवन से उदाहरण प्रस्तुत करो।

डॉ. चन्द्रैय्या जी ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि आज का दिन सार्वदेशिक सभा के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जायेगा। आर्य समाज की गतिविधियाँ सुप्त प्राय सी हो गई थीं लेकिन शीर्षस्थ और विश्व विख्यात संन्यासियों के आने से एक स्वस्थ परिवर्तन की ओर कदम बढ़ा है तथा ये संन्यासी आर्य समाज में आशा के केन्द्र बन गये हैं। स्वामी आर्यवेश जी को सभा का प्रधान बनाना वास्तव में एक प्रशंसनीय कदम है। उन्होंने आर्य समाज की गम्भीर समस्या पर ध्यान आकर्षित करते हुए कहा कि आर्य समाज में युवाओं तथा महिलाओं की कमी एक ज्वलन्त समस्या है इस पीढ़ी के बाद आर्य समाज का क्या होगा?उन्होंने कहा कि वयोवृद्ध व्यक्ति हमारे वन्दनीय हैं और वे अपने संरक्षण में युवाओं को मौका दें, आगे बढ़ायें और प्रोत्साहन दें। उन्होंने प्रस्ताव रखा कि कम से कम 30 प्रतिशत महिलायें और 40 प्रतिशत युवाओं का आर्य समाज में आरक्षण होना चाहिए। उन्होंने सुझाव दिया कि बुद्धिजीवी वर्ग की आर्य समाज में कमी नहीं है इन बुद्धिजीवियों को आगे आना चाहिए तथा स्कूलों, विद्यालयों, कॉलेजों में जाकर वहां आर्य समाज की मान्यताओं की जानकारी देनी चाहिए। उन्होंने कहा कि अपने परिवार के युवाओं को आगे लायें तथा उन्हें कार्य सौंपे तथा वयोवृद्ध उनका मार्ग दर्शन करें। उन्होंने कहा कि राज्य स्तरीय योजना बनाकर प्रत्येक जिले के स्तर पर समिति बनाकर विद्यालयों, गुरुकुलों और कॉलेजों में प्राथमिकता के आधार पर प्रचार कार्य प्रारम्भ किया जाये।

श्री मामचन्द रिवाड़िया जो दिल्ली के प्रसिद्ध आर्य दलित नेता हैं, उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द जी ने दलितों के उद्धार के लिए बहुत कार्य किया है। स्वामी आर्यवेश जी को सार्वदेशिक सभा का प्रधान बनाये जाने का मैं स्वागत करता हूँ तथा मेरा प्रस्ताव है कि सार्वदेशिक सभा की तरफ से ऐसे कार्यक्रम बनाये जायें जिससे जात-पात तोड़ने में मदद मिल सके तथा कार्यक्रम आयोजित करके समाज में इस विषय में जागरूकता फैलाने का

कार्य किया जाना चाहिए। रिवाड़िया जी ने सार्वदेशिक सभा में दलितों के कार्यक्रमों को आगे बढ़ाने के लिए एक लाख रुपये की स्थिर निधि बनाने की घोषणा की उन्होंने कहा कि ''दलित उद्धार स्थिर निधि'' के ब्याज से दलितों के लिए कार्य को बढ़ाया जाये।

भाजपा के युवा नेता योगेश आत्रेय जी ने कहा कि सार्वदेशिक सभा और आर्य समाज के कार्य के लिए मैं हमेशा तैयार हूँ तथा वेद भाष्य के लिए सरकार से सहायता प्राप्त करने के लिए उन्होंने कहा कि इसका प्रपोजल बनाकर भेज दें। उन्होंने कहा कि वेद भाष्य के लिए सरकार से सहायता दिलवाने में हर प्रकार का सहयोग मैं करूँगा तथा व्यक्तिगत रूप से भी मैं सहायता दूँगा।

आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान तथा दिल्ली पुरोहित सभा के अध्यक्ष **आचार्य प्रेमपाल शास्त्री जी** ने कहा कि सभा में बनी हुई स्थिर निधियों का ब्याज सुनियोजित ढंग से व्यय किया जाना चाहिए तथा संस्थाओं और विद्वानों, संन्यासियों, ब्रह्मचारियों आदि को सहायता देने का कार्य प्रारम्भ किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि धर्मार्य सभा का पुनर्गठन किया जाये तथा संगठन पक्ष को मजबूती प्रदान की जाये।

यज्ञादि कार्यों में गहरी आस्था रखने वाले **श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री जी** ने स्वामी आर्यवेश जी के प्रधान बनने की सराहना करते हुए अधिवेशन की सफलता के लिए साधुवाद दिया तथा आशा व्यक्त की कि स्वामी जी एकता प्रयास जारी रखेंगे तथा सभाओं का विलय शीघ्र करायेंगे। उन्होंने वेद भाष्य प्रकाशन के लिए 10 हजार रुपये भी प्रदान किये।

सार्वदेशिक सभा के कार्यकारी प्रधान **श्री सत्यव्रत सामवेदी जी** ने अपने ओजस्वी उद्बोधन में स्वामी आर्यवेश जी को हर प्रकार का सहयोग देने की घोषणा की उन्होंने कहा कि सब लोग कह रहे हैं कि एकता के लिए कार्य करो, लेकिन मैं कहता हूँ कि जिनके निहित स्वार्थ जुड़े हुए हैं वे किसी कीमत पर एकता प्रयासों को परवान नहीं चढ़ने देंगे। उन्होंने विगत वर्षों में किये गये प्रयासों की चर्चा करते हुए कहा कि स्थिति बड़ी विकट है और सारा कार्य आप सबको ही करना हैं। सामवेदी जी ने अपनी विशेष शैली में कार्यकर्ताओं में जोश भरते हुए कहा कि कठिनाइयाँ तो हैं लेकिन आगे बढ़ना है संघर्ष के लिए हमेशा तैयार रहें। उन्होंने योजना प्रस्तुत करते हुए कहा कि पंजाब नशे में बर्बाद हो रहा है, केरल में सर्वाधिक शराब पी जाती है, आज सबसे बड़ा मुद्दा शराब बन्दी का है। एक महीने की विशाल यात्रा नशे के विरुद्ध निकाली जानी चाहिए। सारे देश में क्रांति पैदा करनी होगी। उन्होंने कहा कि आज 'लव-जेहाद' की बहुत चर्चा हो रही है लेकिन इसकी जड़ में जो दहेज का दानव है उससे निजात पाने का कोई रास्ता नहीं निकल रहा है। दहेज के कारण आज हिन्दू लड़कियाँ विधर्मियों के जाल में फंस रही हैं। उन्होंने कहा कि आर्य समाज केन्द्र बने गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार विवाह कराने का। उन्होंने कहा कि आज बड़े आन्दोलन की आवश्यकता है और मुझे पूर्ण विश्वास है कि स्वामी आर्यवेश जी के नेतृत्व में आर्य समाज करवट बदलेगा।

अधिवेशन के विभिन्न सत्रों में सभा प्रधान **स्वामी आर्यवेश** जी ने अपने ओजस्वी उद्बोधन में प्रतिनिधियों को धन्यवाद देते हुए कहा कि आपने जो विश्वास हमारे ऊपर व्यक्त किया है उसके लिए मैं आप सबके प्रति कृतज्ञ हूँ। मैं आपको विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि महर्षि दयानन्द जिस मिशन को लेकर चले थे उसे पूर्ण करने में मैं पूरी निष्ठा, ईमानदारी तथा परिश्रम से कार्य करूँगा उन्होंने कहा कि हम सभी को एक दूसरे के प्रति सम्मान, सद्भाव और विश्वास रखते हुए महर्षि के मिशन को आगे बढ़ाना है। स्वामी जी ने कहा कि आर्य समाज मूलत: एक आध्यात्मिक आन्दोलन है अत: सर्वश्रेष्ठ मूल्यों को लेकर आर्य समाज ने धार्मिक, सामाजिक, शैक्षिक, राजनैतिक एवं आर्थिक क्षेत्र में कीर्तिमान स्थापित कर राष्ट्र को दिशा बोध दिया। यह दिशा बोध जब तक सर्वत्र ''कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'' के वैदिक समाघोष को मूर्तिमंत नहीं करता तब तक ऋषि दयानन्द का मिशन अधूरा रहेगा। स्वामी जी ने कहा कि आज स्थिति पहले से भी अधिक गम्भीर है चारों तरफ, साम्प्रदायिकता, जातिवाद, भ्रष्टाचार, नशाखोरी, शोषण, पाखण्ड और नारी उत्पीड़न का साम्राज्य स्थापित है और आर्य समाज के पास ही वह वैचारिक और आध्यात्मिक शक्ति है जो इन बुराइयों से छुटकारा दिला सकती है। आपस के विवादों के कारण आर्य समाज कमजोर पड़ा है अत: अब विवादों को नष्ट करना ही होगा। और इसके लिए आप सबका सहयोग अपेक्षित है। मैं निरन्तर प्रयास कर रहा हूँ आप सब भी अपने-अपने क्षेत्रों में विवादों को खत्म करने के लिए कटिबद्ध हों क्योंकि प्रान्तों में विवादों का सुलझाना अत्यन्त आवश्यक है। स्वामी जी ने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी की प्रतिभा और उनके जुझारूपन और विलक्षण व्यक्तित्व का लाभ आर्य समाज नहीं ले सका। जितना विरोध स्वामी अग्निवेश जी का आर्य समाज के लोगों ने किया उतना अन्य किसी व्यक्ति का नहीं हुआ। उन्होंने स्वेच्छा से अपने पद का त्याग किया और हमारे ऊपर यह पदभार डाल दिया। स्वामी जी ने कहा कि मैं भी स्वामी जी की तरह प्रधान नहीं बनना चाहता था। लेकिन आर्य समाज अपनी फूट के कारण निरन्तर अधोगति को प्राप्त हो रहा है मैं जहाँ भी कार्यक्रमों में जाता हूँ एक-एक कार्यकर्ता, एक-एक व्यक्ति की इच्छा है कि आर्य समाज एक हो और आप विघटन को समाप्त करो। इस विघटन के कारण आर्य समाज नष्ट भ्रष्ट हो जाये यह मुझे भी बेहद कष्ट देता है। स्वामी जी ने कहा आर्य समाज में एकता स्थापित करने के लिए कितना भी प्रयास करना पड़े कितना भी

thearyasamaj.org

सार्वदेशिक सभा का दो-दिवसीय साधारण अधिवेशन

त्याग करना पड़े मैं पीछे नहीं हटूँगा। स्वामी जी ने कहा कि यहाँ पर अधिकांश प्रान्तीय सभाओं के अधिकारी उपस्थित हैं आप सब यहाँ संकल्प लें कि प्रान्तों में हर प्रकार के विवाद को सुलझायेंगे। स्वामी जी ने कहा कि एकता प्रयासों को लेकर हमने प्रसिद्ध एडवोकेट श्री आर. एस. तोमर की अध्यक्षता में पांच सदस्यों की एक कमेटी का गठन कर दिया है और इस समिति को एकता प्रयासों के लिए हर निर्णय लेने का अधिकार हैं जो इस समिति का निर्णय होगा हमें वही स्वीकार होगा।

स्वामी जी ने कहा कि विवादों से निपटना अपनी जगह है इसके लिए हर सम्भव प्रयास किये जायेंगे लेकिन आर्य समाज को गति प्रदान करने के लिए हम सब अभी से सक्रिय हो जायें। मेरा प्रयास रहेगा कि आर्य समाज के आन्दोलनात्मक, प्रचारात्मक और रचनात्मक स्वरूप को निखारा जाये और आम जनता को जोड़ने का प्रयास किया जाये, इसके लिए स्थानीय आर्य समाज के स्तर पर प्रयास करना आवश्यक है। हमारी आर्य समाजों के अधिकारीगणों से अपील है कि वे अपने अपने क्षेत्रों में आम जनता से जुड़ने का प्रयास करें। उनके सुख-दुःख में शामिल हों और उनकी परेशानियों में सहभागी बनें। आर्य समाजों में युवाओं और महिलाओं के लिए विशेष कार्यक्रम बनाये जायें। शिविर लगाये जायें और उन्हें आर्य समाज के सिद्धान्तों और मन्तव्यों से परिचित कराया जाये जिससे आर्य समाज की उपयोगिता लोगों की नजरों में बढ़ सके। समाज में व्याप्त बुराइयों यथा साम्प्रदायिकता, जातिवाद, भ्रष्टाचार, नशाखोरी, पाखण्ड और नारी उत्पीड़न के विरुद्ध रैलियां, विचार गोष्ठियाँ आयोजित कर आम जनता को जागरूक करने की महती आवश्यकता है विशेष कर युवाओं को आगे लाने की आवश्यकता है। अत: इन मुद्दों को उठाकर आर्य समाज आकर्षक कार्यक्रम बना सकता है। इसके अतिरिक्त प्रान्तीय स्तर पर प्रत्येक जिले में

सक्रिय होकर प्रदर्शन, रैलियां तथा सम्मेलन करने की नितान्त आवश्यकता है।

आर्य समाज के प्रचारात्मक स्वरूप को निखारने के लिए साहित्य प्रकाशन का कार्य तेज किया जायेगा। छोटे-छोटे उपयोगी ट्रैक्ट प्रकाशित कर स्कूलों, विद्यालयों और बाजारों में नि:शुल्क या कम कीमत पर वितरित करने की ओर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। स्वामी जी ने बताया कि हमने इस ओर कार्य प्रारम्भ कर दिया है। स्वामी जी ने कहा कि आर्य समाज का आधार वेद है और वेद ही मानव जाति के कल्याण के आधार हैं वेद ही धर्म का मूल और मानव संस्कृति का सूत्रधार है। अत: हमने घर-घर में वेद पहुँचाने का संकल्प लेकर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना पर कार्य प्रारम्भ कर दिया है। लागत से भी कम मूल्य पर दीपावली से पहले अग्रिम राशि भेजने वालों को मात्र 2100/- रुपये में वेद सैट उपलब्ध कराने का हमारा संकल्प है। मेरी आपसे अपील है कि आप अपनी सभाओं, अपनी आर्य समाजों में अधिक से अधिक वेद सैट मंगाने के लिए अग्रिम राशि भेजने का कष्ट करें और अन्य लोगों को प्रेरित करें कि अपने घरों में वेद अवश्य रखें। स्वामी जी ने बताया कि वेद भाष्य प्रकाशित करने का कार्य बहुत बड़ा कार्य है उन्होंने अपील की वेद भाष्य प्रकाशन के लिए आप सब सहयोग प्रदान करें। एक लाख रुपये देने वाले महानुभावों का चित्र तथा संक्षिप्त परिचय वेद सैट में प्रकाशित किया जायेगा। तथा 10 वेद सैट उन्हें उपहार स्वरूप प्रदान किये जायेंगे। स्वामी जी ने अपील की कि वेद की ज्योति को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए आप स्वयं तथा अपने परिचितों को सहयोग करने के लिए प्रेरित करें। स्वामी जी द्वारा वेद प्रकाशन की घोषणा के उपरान्त सबसे पहले दान स्वरूप सहयोग करने वाले महानुभावों का परिचय कराया गया तथा उनका स्वागत किया गया। स्वामी इन्द्रवेश जी की बहन माता मूर्ति देवी जी ने 1 लाख 25 हजार रुपये प्रदान करने की घोषणा की। आचार्य सन्तराम आर्य ने एक लाख रुपये वेद प्रकाशन हेतु दान स्वरूप प्रदान किये तथा डॉ. लक्ष्मणदास जी ने एक लाख रुपये वेद भाष्य के लिए प्रदान किये। इनके अतिरिक्त स्वामी चन्द्रवेश जी ने 2 लाख 50 हजार रुपये, श्री वेद भल्ला जी ने एक लाख रुपये व सभा कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी ने 1 लाख 25 हजार रुपये की राशि वेद प्रकाशन के लिए प्रदान करने की घोषणा की। स्वामी जी की अपील पर अनेकों व्यक्तियों ने सभा स्थल पर ही दान राशि प्रदान की। तथा अनेकों आर्य समाजों तथा सभाओं के अधिकारियों तथा प्रतिनिधियों ने वेद सैट मंगाने की घोषणा की।

स्वामी जी ने कहा कि जिला स्तर पर वेद सम्मेलन आयोजित कर तथा युवा सम्मेलन आयोजित कर, पाखण्ड, गुरुडम, अन्धविश्वास, साम्प्रदायवाद के विरुद्ध मोर्चा खोलना होगा। ग्रामीण अंचल और छोटे कस्बों में भी वेद प्रचार के लिए कार्यक्रम बनाने की आवश्यकता है। स्वामी जी ने कहा कि विविध भाषाओं में सुन्दर और सस्ते वैदिक ट्रैक्ट प्रकाशित करवाकर पूरे देश में वितरित करने होंगे। समयानुसार आकर्षक और प्रभावशाली प्रचार तन्त्र स्थापित करना होगा तथा स्टीकर्स और होर्डिंग लगाकर अपने कार्यक्रमों को आकर्षक बनाने का प्रयास किया जाना चाहिए।

स्वामी जी ने आर्य समाज के रचनात्मक स्वरूप को निखारने के लिए नई-नई आर्य समाजों की स्थापना पर बल देते हुए कहा कि शिथिल आर्य समाजों में भी जीवन फूंकने की आवश्यकता है। स्वामी जी ने कहा कि भवन निर्माण पर कम तथा वैदिक प्रचार, संस्कार, स्वाध्याय तथा युवाओं के चारित्रिक विकास पर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए। भवन से बाहर निकल कर बाजारों में, स्कूलों में, चौपालों में, झुग्गी-झोपड़ियों में, स्थान बदल-बदल कर साप्ताहिक सत्संगों तथा यज्ञ करने की परम्परा कायम करनी होगी।

स्वामी जी ने बताया कि पूरे देश में जन-जागरण करने के लिए तथा आर्य समाज को हर क्षेत्र में सक्रिय करने के लिए विभिन्न समितियों का निर्माण कर दिया गया है। इन समितियों में अपने-अपने क्षेत्र में योग्यतम, अनुभवी व्यक्तियों को रखा गया है जिससे पूरे देश में एक साथ विभिन्न कार्यों में गति लाई जा सके। स्वामी जी ने कहा कि आर्य समाज में नई ऊर्जा, नई स्फूर्ति, नई क्षमता पैदा करने के लिए हम कटिबद्ध हैं और इन कार्यों में आप सबका सहयोग नितान्त अपेक्षित है।

स्वामी जी ने कहा कि सार्वदेशिक सभा का मुखपत्र वैदिक सार्वदेशिक नई साज-सज्जा के साथ प्रकाशित हो रहा है इसके माध्यम से आप समस्त सूचनायें तथा निर्देश प्राप्त कर सकते हैं और अपनी गतिविधियों की जानकारी सर्वत्र प्रदान कर सकते हैं। अपने-अपने क्षेत्र में वैदिक सार्वदेशिक के अधिक से अधिक सदस्य बनायें तथा अपने पते और ई-मेल अधिक से अधिक संख्या में भेजें जिससे आप ई-मेल से भी वैदिक सार्वदेशिक नि:शुल्क पढ़ सकें। प्रमुख समाजों के पते तथा कर्मठ कार्यकर्ताओं के पते भी आप अधिक से अधिक संख्या में भेजें जिससे उनकी उपयोगिता का लाभ उठाया जा सके। स्वामी जी ने कहा कि अपने-अपने क्षेत्रों में युवा सम्मेलन तथा कार्यकर्त्ता सम्मेलन आयोजित करें जिससे पूरे देश में एक बार अपनी योजनाओं का परिचय दिया जा सके। सम्मेलन रखने से पूर्व तिथियों की जानकारी अवश्य दें। मैं चाहता हूँ कि सभी प्रान्तों में जिला स्तर पर एक बार मेरा कार्यक्रम अवश्य निर्धारित हो। स्वामी जी ने बताया कि 7 नवम्बर को ग्वालियर में 23 नवम्बर को रोहतक में 10 हजार कार्यकर्ताओं का सम्मेलन होगा। इसी प्रकार का कार्यक्रम 14 दिसम्बर को जीन्द में होगा। स्वामी जी ने दिल्ली के कार्यकर्ताओं का आह्वान किया कि दिल्ली में विशाल स्तर पर कार्यकर्ता सम्मेलन आयोजित किया जाना चाहिए। कार्य करने वाले लोगों को आगे लाना होगा। दिल्ली सम्मेलन की तैयारी अभी से प्रारम्भ की जानी चाहिए। स्वामी जी ने बताया कि आगामी अप्रैल में विशाल प्रचार यात्रा का कार्यक्रम बनाया जायेगा इस यात्रा को बहुत बड़े क्षेत्र से होकर निकाला जायेगा। स्वामी जी ने कहा देश के वरिष्ठ आर्यनेता प्रबुद्ध आर्य संन्यासी तथा कर्मठ कार्यकर्ता यहाँ विराजमान हैं मैं सबका हृदय से धन्यवाद देना चाहता हूँ तथा आशा करता हूँ कि आप सब यहाँ से नई ऊर्जा को लेकर जायेंगे तथा आर्य समाज के पुराने गौरव को वापस लायेंगे।

स्वामी आर्यवेश जी ने अप्रतिम क्षमता के धनी, सिद्धान्तों से समझौता न करने वाले साहसिक आन्दोलनों के निर्माता तथा आर्य समाज के लिए सर्वात्मना समर्पित स्वामी अग्निवेश जी की चर्चा करते हुए कहा कि यह बहुत दु:ख का विषय है कि पूज्य स्वामी जी की क्षमताओं का मूल्य आर्यों ने नहीं समझा। उन्होंने स्वामी जी की साहसिक जीवन झांकी प्रस्तुत करते हुए बताया कि 21 सितम्बर को स्वामी अग्निवेश जी का जन्म दिवस है और स्वामी जी अपना जन्म दिवस किसी बड़े मुद्दे को उठाकर मनाते हैं। इस बार यह जन्म दिवस अत्यन्त विशाल स्तर पर मांसाहार तथा गो-हत्या के विरुद्ध विशाल प्रदर्शन तथा उपवास सरखकर मनाया जायेगा। 21 सितम्बर को दिल्ली के जन्तर-मन्तर पर अत्यन्त रचनात्मक कार्यक्रम रखा गया है। वहां पर विशाल पंडाल लगाया जायेगा तथा सारे दिन स्वामी जी उपवास पर बैठेंगे तथा मूक प्राणियों की हत्या के विरुद्ध शक्तिशाली आवाज उठायेंगे। सभी सम्प्रदायों के धर्माधिकारी तथा कार्यकर्ता भारी संख्या में उपस्थित रहेंगे। स्वामी जी ने बताया कि यह एक बड़ा मुद्दा बनने जा रहा है और यहीं से आर्य समाज एक नई भूमिका में पदार्पण करेगा। स्वामी जी ने कहा कि इस अवसर पर आप सबकी तथा आस-पास के क्षेत्रों से भारी संख्या में उपस्थिति अपेक्षित है। आर्य समाज के बैनर तथा ओ३म् के झंडे लेकर भारी संख्या में पहुँचे तथा जो दूर रहते हैं नहीं आ सकते वे अपने-अपने क्षेत्रों में प्रदर्शन करें उपवास रखें तथा पत्र-पत्रिकाओं में खबर छपवायें। यह बहुत बड़ा कार्य है तथा आर्य समाज को ताकत दिखाने का एक मौका है। आर्य समाज के आन्दोलनों का कार्य यहीं से प्रारम्भ होने जा रहा है।

आर्य प्रतिनिधि सभा उड़ीसा से **श्री आर्य कुमार ज्ञानेन्द्र जी** ने अपने उद्‌बोधन में स्वामी आर्यवेश जी के प्रधान बनने पर प्रसन्नता प्रकट की। उन्होंने उड़ीसा में आर्य समाज के प्रचार कार्यों का भी ब्यौरा दिया उन्होंने कहा कि युवाओं को आगे लाने की जरूरत है। मैं स्वामी जी का तन-मन-धन से सहयोग करूँगा।

बिहार सभा के प्रधान **श्री भूपनारायण शास्त्री** ने बिहार में किये गये कार्यों का ब्यौरा दिया उन्होंने कहा कि आज तीन दुश्मन सबसे प्रबल हैं। अविद्या, अन्याय और अभाव इनसे लड़ना होगा। उन्होंने कहा कि साहित्य प्रकाशन के कार्य को बढ़ावा देना होगा। उन्होंने आश्वासन दिया कि प्रकाशन कार्य में वह भरपूर सहयोग देंगे।

डॉ. वीरपाल वेदालंकार ने अपनी विशिष्ट शैली में अपनी व्यथा प्रकट करते हुए कहा कि आज आर्य समाज तो घट रहा है लेकिन प्रतिनिधि सभायें बढ़ रही हैं जिससे पूछो वह कहता है कि असली तो हम हैं लगता है कि नकली तो आर्य समाज है। उन्होंने आर्य समाज की एकता पर बल देते हुए कहा कि आर्य समाज की एकता के लिए सभी को कटिबद्ध होना पड़ेगा।

श्री राम सिंह आर्य राजस्थान ने कहा कि प्रस्ताव तो बहुत आ रहे हैं लेकिन इनका क्रियान्वयन कैसे होगा यह विचारणीय है। उन्होंने कहा कि मेरा मानना है कि एक बड़े मुद्दे को लेकर कुछ समय तक वैचारिक आन्दोलन चलाया जाये और जब

thearyasamaj.org

सार्वदेशिक सभा का दो-दिवसीय साधारण अधिवेशन

जन-जन तक मुद्दा पहुंच जाये तब विशाल आन्दोलन किया जाये और समयबद्ध तरीके से सारी योजना बनाई जाये।

राष्ट्रीय कवि **श्री सारस्वत मोहन मनीषी** ने कहा कि आज आर्य समाज के सामने अनेकों समस्यायें हैं, लेकिन घबराने की जरूरत नहीं है क्योंकि दयानन्द का एक-एक सिपाही अपने में एक बटालियन के बराबर होता है। आवश्यकता है तो सिर्फ दूरदर्शी नेतृत्व की। उन्होंने कहा कि स्वामी आर्यवेश जी के रूप में आर्य समाज को एक हीरा प्राप्त हुआ है और बहुत अर्से से आर्य समाज को जिस चीज की कमी खल रही थी वह अब जाके प्राप्त हुई है। आप सबका सहयोग अपेक्षित है। उन्होंने अपनी चिर-परिचित शैली में गीत सुनाकर सबको सम्मोहित कर दिया।

बिना शक्ति के भक्ति भावना पंगु अधूरी है।

आज बांसुरी नहीं सुदर्शन चक्र जरूरी है।

उन्होंने कहा आज यहां से एक प्रतिज्ञा करके जाओ कि हम आर्य समाजी हों या नहीं हों लेकिन दयानन्दी बनकर जायेंगे।

किशन लाल जी भोपाल ने कविता पाठ करके सबको रोमांचित कर दिया।

वेद विरुद्ध जितने मजहब थे खोल दी सबकी पोल।

स्वामी दयानन्द ने खूब चलाया 14 गोली का पिस्तौल॥

श्री हरिशंकर जी अग्निहोत्री ने इलेक्ट्रानिक मीडिया के महत्त्व को दर्शाते हुए आर्य समाज में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के प्रयोग पर बल दिया। उन्होंने कहा सम्पर्क तथा प्रचार कार्यों में इलेक्ट्रॉनिक साधनों के प्रयोग की आवश्यकता है। बैवसाइट, गूगल तथा इण्टरनेट के प्रयोग से हम पूरी दुनिया से जुड़ सकते हैं। उन्होंने एकता प्रयास को व्यक्तिगत तथा संगठन स्तर पर करने की जरूरत

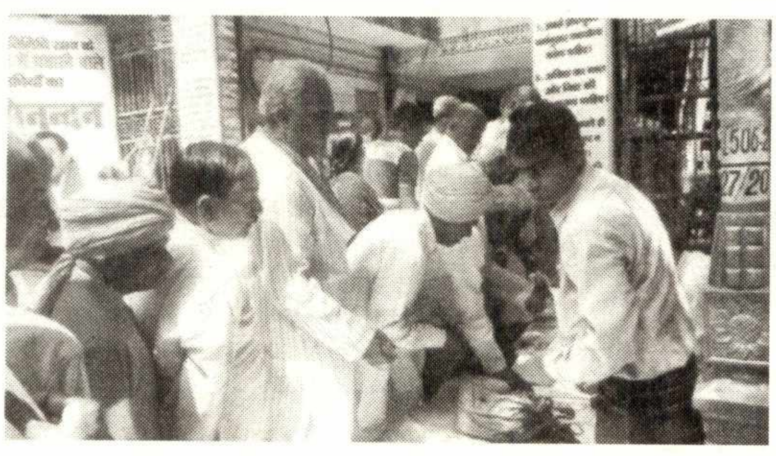

पर बल दिया।

स्वामी रामवेश जी आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान ने कहा कि हम सच्चे लोग हैं काम में विश्वास रखते हैं हरियाणा में हमने कई सफल आन्दोलन किये हैं और आज सार्वदेशिक सभा को भी आन्दोलन का रास्ता पकड़ना पड़ेगा। उन्होंने कहा कि आन्दोलन से कार्यकर्ता निकलते हैं। उन्होंने कहा कि आज आवश्यकता सेवा भाव की है जो हमसे दूर होता चला जा रहा है। संगठन को कुछ न कुछ करते रहना चाहिए तभी लोग हमारे साथ जुड़ेंगे। उन्होंने कहा कि मुर्दा वातावरण से कोई नहीं जुड़ता। उन्होंने देश में बढ़ते नशे पर चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा कि सारे देश में नशे को जड़मूल से उखाड़ना होगा। नशाखोरी के खिलाफ एक बड़ा आन्दोलन खड़ा करना होगा। हम सबको नीति, नेता, नियत, एक साथ लेकर चलने होंगे।

उत्तराखण्ड के मंत्री **श्री दिनेश आर्य** ने कहा कि स्वामी आर्यवेश जी का हम लोग तन-मन-धन से सहयोग करेंगे। उन्होंने उत्तराखण्ड में किये गये कार्यों की चर्चा की तथा बताया कि उत्तराखण्ड में पशु बलि पर लगाम लगाने में हम लोग काफी हद तक सफल हुए हैं।

श्री केशव सिंह जी मध्य भारतीय सभा के मंत्री ने अपने क्षेत्र में किये गये कार्यों का विवरण दिया तथा दुःख प्रकट करते हुए कहा कि हमारे यहाँ भी दो सभायें काम कर रही हैं। स्वार्थी लोगों ने सभा बनाई हुई है और निरन्तर प्रयास करने के बाद भी हम सफल नहीं हो सके हैं। स्वामी धर्मानन्द जी ने भी बहुत प्रयास किये लेकिन वे भी निराश लौट गये। उन्होंने स्वामी जी से प्रार्थना की कि आप मध्यस्थता करें और जो निर्णय आप देंगे हमें मान्य होगा।

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश विदर्भ के प्रधान **श्री प्रभाशंकर तिवारी** ने कहा हमारे यहाँ भी दो सभायें चल रही हैं स्थिति अच्छी नहीं है स्वार्थी तत्व घुसे हुए हैं और वे किसी की भी बात नहीं सुनते।

मध्य प्रदेश विदर्भ के मंत्री **श्री जय नारायण जी** ने कहा कि आज आवश्यकता आर्य समाज से बाहर निकल कर कार्य करने की है तथा स्थानीय मुद्दों को उठाकर हम आम जनता से जुड़ सकते हैं उन्होंने कहा कि चुनाव प्रक्रिया बन्द होनी चाहिए इससे द्वेष भाव पनपता है। अधिकारियों को मनोनीत करने की व्यवस्था होनी चाहिए।

झारखण्ड आर्य प्रतिनिधि सभा रांची के **श्री वरूण बिहारी जी** का कहना है कि महर्षि दयानन्द जी ने आर्य समाज की स्थापना की थी आर्य प्रतिनिधि सभा की नहीं। हर जगह सम्पत्ति के विवाद हैं। स्वार्थी तत्वों ने आर्य समाज को बिगाड़ कर रख दिया है।

महाराष्ट्र के **श्री सम्भाजी पंवार** ने प्रस्ताव रखा कि सर्वशिक्षा अभियान के अन्तर्गत महाराष्ट्र में बच्चों को अण्डे दिये जाते हैं खाने के लिए उन पर रोक लगनी चाहिए।

पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री **श्री ओम प्रकाश आर्य** ने कहा कि आज के बिगड़ते वातावरण में घर-घर में वेद का प्रचार हो तथा सार्वजनिक स्थानों पर यज्ञ किये जायें। जन-जन तक महर्षि की विचारधारा पहुँचाई जाये।

आन्ध्र प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के **श्री लक्ष्मण सिंह जी** ने हिन्दी भाषा पर बल देते हुए कहा कि आज हिन्दी दिवस है सभी प्रान्तीय सभाओं को अपनी मातृ भाषा के साथ हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देना चाहिए।

चण्डीगढ़ से **श्री सोमदत्त शास्त्री** का कहना था कि आज देश में खास कर पंजाब में नशे का कारोबार दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है युवा शक्ति नशे की लत में पड़कर बर्बाद हो रही है। इस भयानक संकट से आर्य समाज से ही कुछ आशा है। नशे के खिलाफ एक बड़े आन्दोलन की रूपरेखा बनाई जानी चाहिए।

छत्तीसगढ़ से **स्वामी अशोकानन्द जी** ने अपने विचार रखते हुए कहा कि वैर से वैर समाप्त नहीं होता दूसरों की बुराई मत देखो अच्छी बातों को देखो। आरोग्य अभियान चलाने की आवश्यकता है हम अपने क्षेत्र में आरोग्य का कार्य करते हैं और लोग हमसे जुड़ते हैं।

दिल्ली सभा के मंत्री **श्री बलजीत सिंह आदित्य** ने वीर रस की कविता सुनाकर सभी में जोश भर दिया।

बागेश्वर से पधारे **श्री गोविन्द सिंह भण्डारी** ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि स्वामी आर्यवेश जी के प्रधान बनने से आर्य समाज का वातावरण बदल रहा है सारे देश में प्रसन्नता की लहर है उन्होंने कहा कि आने वाला समय आर्य समाज का स्वर्णिम युग बनकर आयेगा। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द के सारे कार्यक्रमों को विश्व की सरकारें अपना रही हैं उन्होंने विश्वास व्यक्त किया महर्षि का जो स्वप्न था उसे स्वामी आर्यवेश जी पूर्ण करेंगे। उन्होंने कहा कि स्वामी जी जब बागेश्वर पधारे थे तो वहाँ एक उत्साह का वातावरण बना था उत्तराखण्ड से पशुबलि को समाप्त करा दिया गया है क्योंकि जहां भी सन्तों के पग पड़ते हैं वहां कार्य सिद्ध होते हैं। उन्होंने कहा कि जो भी आदेश स्वामी जी का होगा उसे तन-मन-धन से पूर्ण किया जायेगा। 21 सितम्बर को स्वामी अग्निवेश जी के जन्म दिवस पर मांसाहार तथा गो-हत्या के विरुद्ध हम अपने क्षेत्र में उपवास रखेंगे तथा प्रदर्शन करेंगे। उन्होंने बताया कि उत्तराखण्ड में मद्यनिशेध का प्रयास किया जा रहा है।

डॉ. रवि प्रकाश जी ने कहा कि जो प्रस्ताव यहां रखे गये हैं उनमें वृद्धि की जानी चाहिए जिससे सरकार को यह पता चले कि आर्य समाज जागरूक है। उन्होंने कहा कि ग्लोबलाइजेशन के नाम

पर रेडियेशन फैलाने वाली कोई भी फैक्ट्री नहीं लगाई जानी चाहिए। उन्होंने बताया कि विकसित देशों की यह साजिश है कि समझौते के नाम पर हानिकारक इण्डस्ट्रीज भारत में लगा दो क्योंकि यहां मानव के जीवन की कोई कीमत नहीं है। उन्होंने बताया की पर्यावरण की दृष्टि से 25 प्रतिशत बन क्षेत्र होना अत्यन्त आवश्यक है लेकिन आपको आश्चर्य होगा कि सिगरेट बनाने वाली कम्पनियों को पेड़ काटने की पूरी स्वतन्त्रता है। भारत सरकार को एक ज्ञापन दिया जाये कि सिगरेट कम्पनी को पेड़ काटने की अनुमति न दी जाये। उन्होंने रहस्योद्घाटन किया कि मदरसों को करोड़ों रुपयों का अनुदान सरकार देती है सरकार से मांग की जाये कि मदरसों की तरह गुरुकुलों को भी अनुदान दिया जाये तथा आर्य समाजों की भी सहायता की जाये। तथा गुरुकुलों में आचार्यों को वेतन भी सरकार की तरफ से मिलना चाहिए। उन्होंने कहा कि संस्कृत शिक्षा को ऊपर से लेकर नीचे तक की कक्षाओं के लिए अनिवार्य बनाया जाये। रवि प्रकाश जी ने बताया कि मनुष्य के लिए आवश्यक मिथेन गैस एक गौ एक दिन में 100 से 150 लीटर तक छोड़ती है जो अत्यन्त लाभप्रद है अत: गो-शालाओं के लिए भी सरकार को अलग से अनुदान की व्यवस्था करनी चाहिए तथा गो-पालन को बढ़ावा देना चाहिए।

डॉ. मोक्षराज जी अजमेर ने अपने ओजस्वी उद्बोधन में महर्षि दयानन्द सरस्वती का गुणगान करते हुए कहा कि पोंगापंथी को तोड़कर महर्षि ने वेद में विज्ञान होने की बात आधिकारिक रूप से कही। उन्होंने कहा कि अजमेर का महर्षि के जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है वहां हवाई अड्डा बनाया जा रहा है। हवाई अड्डे के नामकरण के लिए अन्य कई संस्थाएं प्रयासरत हैं मैं अपने स्तर पर प्रयास कर रहा हूँ कि हवाई अड्डे का नाम महर्षि के नाम पर रखा जाये। इससे महर्षि के नाम की देश-विदेश में पहचान बनेगी। मेरा अनुरोध है कि सार्वदेशिक सभा इस ओर कुछ ठोस कदम उठाये और हवाई अड्डे का नाम महर्षि के नाम पर रखवाने में विशेष प्रयास करे।

श्री सत्यवीर योगी रोहिणी ने अपने धारा प्रवाह प्रवचन में सभा नेतृत्व की प्रशंसा करते हुए कहा कि आर्य समाज में स्वामी आर्यवेश के प्रधान चुने जाने से उत्साह की लहर है और यहां पधारे पूरे देश के आर्य नेताओं प्रतिनिधियों की शक्ति का सदुपयोग करना आपके विवेक पर निर्भर करता है। उन्होंने कहा कि आज अन्य मतावलम्बी अपना-अपना टी.वी. चैनल चला रहे हैं आर्य समाज को इस दिशा में प्रभावी कदम उठाने की जरूरत है। मेरा मानना है कि प्राथमिकता के साथ आर्य समाज को अपना स्वयं का चैनल चलाने के लिए ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि धर्म एक होता है मत अलग-अलग हो सकते हैं। आज इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का जमाना है उसके माध्यम से प्रचार-प्रसार करना होगा। आर्य समाज के पास प्रतिभाओं की कमी नहीं है जरूरत है उन्हें आगे लाने की।

आचार्य सत्यव्रत जी ने कहा कि गुरुकुलों आदि में महर्षि कृत ग्रन्थ नहीं पढ़ाये जाते सभी गुरुकुलों में सत्यार्थ प्रकाश, संस्कार विधि आदि ग्रन्थों के बारे में विद्यार्थी को बताने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि परिवार में जन्म ले लेने से कोई आर्य नहीं बनता आर्य एक पढ़ाई है जिसे पढ़ना पड़ेगा। स्वामी दयानन्द के बारे में विद्यालयों, गुरुकुलों में गम्भीरता से समझाने की जरूरत है। गुरुकुलों को आधुनिक बनाये जाने की भी अत्यन्त आवश्यकता है।

सार्वदेशिक सभा के उपमंत्री **श्री महेन्द्र सिंह शास्त्री** ने स्वामी आर्यवेश जी की कर्मठता की प्रशंसा करते हुए कहा कि इस

शेष पृष्ठ 15 पर

thearyasamaj.org

सार्वदेशिक सभा के साधारण अधिवेशन में वक्ता अपने विचार रखते हुए

स्वामी अग्निवेश जी (दिल्ली)

स्वामी धर्मानन्द जी (उड़ीसा)

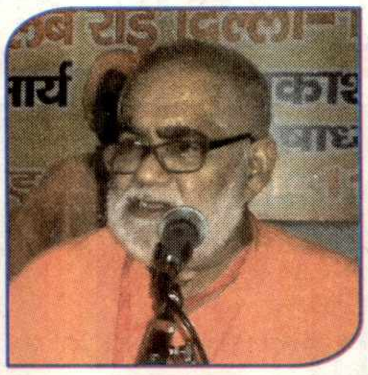
स्वामी प्रणवानन्द जी (दिल्ली)

श्री आनन्द कुमार आर्य जी
(कार्यकारी प्रधान आचार्य बलदेव पक्ष)

प्रो विट्ठलराव आर्य जी (सभा मंत्री)

श्री आर. एस. तोमर जी
अध्यक्ष न्याय सभा

पं. माया प्रकाश त्यागी जी
सभा कोषाध्यक्ष

श्री सत्यव्रत सामवेदी जी
(कार्यकारी प्रधान)

डॉ. अनिल आर्य जी
(सभा उपप्रधान)

श्री योगेश आत्रेय जी
(राजस्थान)

आचार्य प्रेमपाल शास्त्री जी
(सभा उपप्रधान)

श्री रामसिंह आर्य जी
(सभा उपमंत्री)

श्री सदाविजय आर्य जी
(सभा उपमंत्री)

श्री भूपनारायण शास्त्री जी
प्रधान बिहार सभा

श्री गोविन्द सिंह भण्डारी
(सभा उपमंत्री)

स्वामी रामवेश जी
प्रधान हरियाणा सभा

श्री ओम प्रकाश आर्य
मंत्री, पंजाब सभा

श्री संभा जी पंवार
महाराष्ट्र

श्री आर्य कुमार ज्ञानेन्द्र जी
(उड़ीसा)

श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री जी
दिल्ली

डॉ. सारस्वत मोहन मनीषी जी
(दिल्ली)

बहन पूनम आर्या जी
(हरियाणा)

श्री महेन्द्र सिंह शास्त्री जी
(सभा उपमंत्री)

श्री सत्यवीर योगाचार्य
(दिल्ली)

श्री यशपाल यश जी
(राजस्थान)

डॉ. रवि प्रकाश आर्य जी
(हरियाणा)

आचार्य सत्यव्रत जी
(मध्य प्रदेश)

डॉ. धर्मवीर आर्य जी
(दिल्ली)

श्री हरिशंकर अग्निहोत्री जी
(आगरा)

श्री वीरपाल वेदालंकार जी
(गाजियाबाद)

thearyasamaj.org

सार्वदेशिक सभा के साधारण अधिवेशन में प्रान्तीय सभाओं के अधिकारियों एवं विशिष्ट महानुभावों का अभिनन्दन करते हुए

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी तथा सभा मंत्री प्रो. विट्ठलराव जी

thearyasamaj.org

सार्वदेशिक सभा के साधारण अधिवेशन में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का अभिनन्दन करते हुए प्रान्तीय सभाओं के अधिकारीगण

स्वामी अग्निवेश जी एवं
प्रेमपाल शास्त्री जी

श्री आनन्द कुमार आर्य
(कार्यकारी प्रधान आचार्य बलदेव पक्ष)

स्वामी चन्द्रवेश, स्वामी व्रतानन्द जी एवं
अश्वनी कुमार शर्मा (प्रधान, पंजाब सभा)

स्वामी धर्मानन्द जी एवं
श्री डी. के. भल्ला, नैरोबी (केनिया)

वैद्य इन्द्रदेव जी (दिल्ली)

श्री वेद भल्ला (पंजाब) एवं
हरियाणा सभा मंत्री राममोहन राय एवं नरेन्द्र सुमन

आचार्य सोमदत्त शास्त्री (चण्डीगढ़)

श्री सारस्वत मोहन मनीषी जी, पूर्व विधायक
अजीत सिंह एवं ओम सपरा तथा वीरपाल वेदालंकार

डॉ. अनिल आर्य (उपप्रधान) एवं
श्रीमती गायत्री मीना (नोएडा)

श्री मित्रमहेश आर्य (गुजरात)

डॉ. लक्ष्मणदास आर्य एवं
श्री कमल आर्य (म. प्र.)

श्री लक्ष्मी नारायण भार्गव (म. प्र. विदर्भ)
तथा स्वामी श्रद्धानन्द (पलवल)

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के
अधिकारीगण

श्री हरदेव आर्य (राजस्थान)
स्वामी विश्वानन्द (आगरा) एवं डॉ. विद्यासागर

आर्य युवक परिषद् के
कार्यकर्त्ता

सार्वदेशिक सभा के दो-दिवसीय साधारण अधिवेशन में विभिन्न सभाओं के पदाधिकारी सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के साथ

आन्ध्र प्रदेश सभा के अधिकारीगण

पंजाब सभा के अधिकारीगण

दिल्ली सभा के अधिकारीगण

उत्तराखण्ड एवं दिल्ली सभा के अधिकारीगण

छत्तीसगढ़ सभा के अधिकारीगण

दिल्ली, हरियाणा एवं उत्तर प्रदेश सभा के अधिकारीगण

बिहार सभा के अधिकारीगण

मध्य प्रदेश सभा के अधिकारीगण

thearyasamaj.org

जीवन – वृत्त

नाम	:	स्वामी आर्यवेश
शिक्षा	:	एम.ए., एल. एल. बी. आनर्स हिन्दी, फ्रेंच भाषा सर्टिफिकेट कोर्स, भाषा विज्ञान में पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा।
पता	:	7, जन्तर-मन्तर रोड, नई दिल्ली-110001
दूरभाष	:	011-23367943
कार्यालय	:	सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2
दूरभाष	:	011-23274771 ई मेल:- aryavesh@gmail.com
पद	:	प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली
	:	प्रधान, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, नई दिल्ली
	:	ट्रस्टी, महर्षि दयानन्द धाम अमृतसर, पंजाब
	:	सह-संयोजक, विश्व आर्य महासम्मेलन, दिल्ली (2001)
	:	मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (1982-1992)
	:	कार्यकारी अध्यक्ष, बंधुआ मुक्ति मोर्चा, नई दिल्ली
	:	ट्रस्टी, विश्व चैतन्य योगपीठ, दिल्ली
	:	कोषाध्यक्ष, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली (2001-2004)
	:	प्रधान सम्पादक, 'राजधर्म' पत्रिका
	:	प्रधान, स्वामी इन्द्रवेश फाऊण्डेशन

सामाजिक गतिविधियाँ

1. कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में रैगिंग एवं मांसाहार विरोधी आन्दोलन का नेतृत्व एवं सफलता प्राप्त (1973-74)
2. हरियाणा में अंग्रेजी हटाओ रोजगार दिलाओ आन्दोलन का सफल नेतृत्व वर्ष (1972)
3. हरियाणा के छात्र आन्दोलन में सक्रिय भूमिका। वर्ष 1974 जे. पी. आन्दोलन में छात्र संघर्ष समिति का नेतृत्व किया।
4. वर्ष 1976 में सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के अध्यक्ष पद पर निर्वाचित तथा वर्तमान तक अध्यक्ष पद पर कार्यरत।
5. जून, 1980 में दयानन्द कॉलेज हिसार में दस दिवसीय ऐतिहासिक युवक शिविर का संयोजन जिसमें 1400 युवकों ने भाग लिया।
6. वर्ष 1982 में हिसार से सोनीपत तक की सात दिवसीय नशा विरोधी पदयात्रा का नेतृत्व। यात्रा में 100 युवकों ने भाग लिया तथा लगभग दो हजार लोगों ने नशे छोड़ने की प्रतिज्ञा की।
7. 1978 से 1985 तक गुरुकुल सिंहपुरा (रोहतक), हरियाणा के मुख्य अधिष्ठाता।
8. वर्ष 1984 में पन्द्रह सौ किलोमीटर की मोटर साईकिल यात्रा का नेतृत्व, यात्रा का उद्देश्य उग्रवाद के विरुद्ध जन-जागरण।
9. वर्ष 1987 में स्वामी अग्निवेश जी के नेतृत्व में दिल्ली से देवराला तक आयोजित सती प्रथा विरोधी ऐतिहासिक पदयात्रा का संयोजन। जिसके कारण आजादी के बाद पहली बार सती प्रथा के विरुद्ध कानून बना।
10. वर्ष 1986 में ऐतिहासिक कुम्भ मेले पर हरिद्वार में चतुर्वेद पारायण महायज्ञ एवं विशाल वेद प्रचार शिविर का संयोजन किया। इसकी अध्यक्षता स्वामी इन्द्रवेश जी ने की थी। इस अवसर पर पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराना, शास्त्रार्थ की चुनौती, विशाल पाखण्ड विरोधी शोभायात्रा एवं विविध सम्मेलनों का आयोजन किया गया। कार्यक्रम 45 दिन तक चला। देशभर के लगभग एक लाख लोगों ने भाग लिया।
11. वर्ष 1992 में अर्धकुम्भ मेले के अवसर पर विशाल वेद प्रचार शिविर का आयोजन हरिद्वार में। वर्ष 1998 के पूर्ण कुम्भ, वर्ष 2004 के अर्धकुम्भ, वर्ष 2010 के पूर्ण कुम्भ मेले पर हरिद्वार में विशाल वेद प्रचार शिविरों का संयोजन एवं पाखण्ड-खण्डिनी पताका का आरोहण तथा नशा विरोधी अभियान।
12. वर्ष 1992 से 1994 तक शराबबन्दी आन्दोलन का संयोजन हरियाणा में शराबबंदी लागू करवाने में कामयाबी प्राप्त। उत्तर प्रदेश व हरियाणा में जन-जागरण यात्राओं का संयोजन किया।
13. हरिद्वार, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, महात्मा नारायण स्वामी आश्रम तल्ला रामगढ़, गुरुकुल टटेसर, तपोवन आश्रम, खेड़ला (गुड़गांव) आदि स्थानों पर व्यायाम शिक्षक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन। मसूरी, नैनीताल, चम्बा, हरिद्वार, तल्ला रामगढ़, कण्व आश्रम, गुरुकुल कांगड़ी आदि स्थानों पर सन् 1980 से 2014 तक निरन्तर कार्यकर्ता कैपसूल कैम्पों का संयोजन।
14. छोटे-बड़े लगभग एक हजार शिविरों के माध्यम से अनुमानत: तीन लाख युवकों को देशभक्ति, चरित्र एवं वैदिक सिद्धान्तों की शिक्षा एवं आर्य समाज से परिचित कराया।

मुख्य कार्य :-

सार्वदेशिक सभा तथा आर्य युवक परिषद् के माध्यम से युवा पीढ़ी को देशभक्ति, चरित्र एवं आर्य समाज की विचारधारा से ओत-प्रोत करना। परिषद् की इकाइयाँ देश के पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, राजस्थान, उत्तराखण्ड, उड़ीसा, बंगाल, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, आन्ध्र प्रदेश आदि प्रदेशों एवं विश्व के अमेरिका, हालैण्ड, जर्मनी, थाईलैण्ड व इण्डोनेशिया, दक्षिण अफ्रीका आदि देशों में कार्य कर रही है। परिषद् के तत्वावधान में युवक व युवतियों के शिविरों का आयोजन किया जाता है तथा आर्य समाज के प्रचारार्थ पदयात्रायें, वाहन यात्रायें, विचारगोष्ठियाँ एवं सम्मेलन आयोजित किये जाते हैं। परिषद् के पास शिक्षकों की एक प्रभावशाली टीम है जो आर्य समाज के सिद्धांतों को नई पीढ़ी में प्रवाहित करने के लिए कृतसंकल्प है।

कार्यशैली :-

आर्य समाज के उत्सवों, सम्मेलनों एवं महासम्मेलनों में देश के विभिन्न प्रदेशों में एक प्रखर वक्ता के रूप में आर्यों विशेषकर युवाओं में नई स्फूर्ति एवं उत्साह पैदा करना। आपकी गिनती आर्य समाज के ओजस्वी वक्ता, कुशल संगठनकर्ता, अनुभवी संयोजक एवं गम्भीर चिन्तक के रूप में की जाती है। आप एक प्रभावशाली वक्ता ही नहीं बल्कि अच्छे लेखक एवं पत्रकार भी हैं। वर्तमान में आप आर्य समज की सर्वाधिक सुन्दर एवं आकर्षक पत्रिका राजधर्म के प्रधान सम्पादक हैं तथा राजधर्म का वर्तमान स्वरूप प्रदान करने में आपकी योग्यता एवं योजना को ही श्रेय जाता है। प्रचार कार्य में न केवल भारत बल्कि अन्य कई देशों में भी आपने वैदिक धर्म का ध्वज बुलन्द किया है। इसी निमित आपने, कीनिया, दुबई, जर्मनी, हालैण्ड, बैल्जियम, स्विटजरलैण्ड, इटली, दक्षिण अफ्रीका, जापान, नेपाल, भूटान, फ्रान्स, अमेरिका तथा कनाडा का भ्रमण किया है।

प्रचारार्थ भावी योजनायें :-

1. आर्य समाज के मिशनरी (समर्पित) प्रचारक तैयार करने के लिए 'वैदिक मिशनरी प्रशिक्षण केन्द्र' स्थापित करना जिसमें, उन युवकों को ही प्रशिक्षण व अध्ययन कराया जायेगा जो अपना पूरा जीवन समाज सेवा में लगाना चाहते हैं। इन युवकों को दो-दो वर्ष तक सिद्धान्त, संगठन, भाषण कला एवं विभिन्न सामयिक समस्याओं के समाधान के लिए प्रशिक्षण दिया जायेगा। केन्द्र में कर्मकाण्ड, संगीत, वक्तृत्व एवं विविध कलाओं के प्रशिक्षण की समुचित व्यवस्था होगी।
2. सशक्त आर्य युवक संगठन खड़ा करके युवकों को आर्य समाज से जोड़ना एवं युवा निर्माण अभियान को सक्रिय करना।
3. आर्य समाज के सिद्धान्तों को राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के प्रामाणिक मंचों पर पहुंचाना व प्रस्तुत करना। इसके लिए वर्तमान में प्रचलित प्रभावी इलेक्ट्रॉनिक एवं सोशल मीडिया के माध्यमों का उपयोग करना। इण्टरनेट, फेसबुक, ट्वीटर, वाट्सअप, वैबसाइट आदि के माध्यम से पूरे विश्व में वेद ज्ञान द्वारा सभी समस्याओं का समाधान प्रस्तुत कर एक संवाद एवं बहस प्रारम्भ करना।
4. राजधर्म प्रकाशन के माध्यम से ऐसा वैदिक साहित्य तैयार करना जो वर्तमान परिप्रेक्ष में वैदिक सिद्धान्तों को सरल भाषा में प्रस्तुत करता हो। इस योजना के अन्तर्गत सैकड़ों सुन्दर ट्रैक्ट तैयार करवाना तथा अनुपलब्ध ग्रन्थों का प्रकाशन करना है।
5. ऑडियो-वीडियो एवं इलैक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से प्रचार की प्रभावशाली योजना को मूर्तरूप देना।
6. साहित्य साधना - साधना की डगर, ग्लेसपस ऑफ स्वामी दयानन्द, भगत सिंह आदि पुस्तकों का सम्पादन कर प्रकाशित कराया।

thearyasamaj.org

अधिवेशन में सर्वसम्मति से पारित प्रस्ताव

प्रस्ताव संख्या-1

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, ''महर्षि दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 का यह साधारण अधिवेशन इस निष्कर्ष पर पहुंचा है कि आर्य समाज में जो फूट, मुकदमेबाजी, नेताओं का चरित्र-हनन, व्यवस्था में शिथिलता, परिसम्पत्तियों का दोहन, वेद प्रचार के प्रति उदासीनता, अवांछनीय, आर्येत्तर तत्वों की निर्बाध घुसपैठ, समाज सुधार के प्रति निष्क्रियता दृष्टिगोचर है उसका मूल कारण भ्रष्ट चुनाव पद्धति है। अदालतों की देखरेख में भी जो चुनाव हुए हैं उन्हें भी साफ-सुथरा नहीं कहा जा सकता, न ही इसे समस्या के आदर्श व स्थायी समाधान के रूप में अपनाया जा सका है। मूल समस्या यह है कि आर्य समाज को भ्रष्ट चुनाव पद्धति से मुक्ति कैसे दिलाई जाए?निश्चय ही इसकी वजह से संगठन की एकता, क्षमता, गरिमा, कीर्ति नष्ट हुई व हो रही है तथा धन, समय, संसाधनों की बर्बादी भी हो रही है।

आर्य समाज में भ्रष्ट चुनाव पद्धति को समाप्त करना तथा परिसम्पत्तियों की रक्षा करने के लिए पूरे देशभर की आर्य समाजों, प्रतिनिधि सभाओं, सार्वदेशिक सभा के लिए व आर्य संस्थाओं के लिए एक ट्रस्ट बने या गुरुद्वारा एक्ट की तर्ज पर आर्य समाज एक्ट बने। अधिवेशन इस प्रस्ताव को प्रस्तुत करता है और महसूस करता है कि यह विषय विचारणीय है। अतः यह साधारण अधिवेशन प्रस्ताव को सैद्धान्तिक रूप से स्वीकार करता है और इसे बेहतर बनाने के लिए सभी की सहमति प्राप्त करने तथा नया संविधान बनाने और उसे लागू करने की संभावना को तलाशने का प्रस्ताव करता है और इस दिशा में सभी आवश्यक कदम उठाने का भी प्रस्ताव प्रस्तुत करता है। यह साधारण अधिवेशन यह भी महसूस करता है कि यदि यह नई व्यवस्था लागू हो जाये तो आर्य समाज पुनः एकताबद्ध और संकल्पबद्ध होकर अपने क्रांति पथ पर अग्रसर होगा।

प्रस्ताव संख्या-2

सार्वदेशिक सभा का यह साधारण अधिवेशन गम्भीरता से इस तथ्य को स्वीकारता है कि ऋषि-मुनियों की परम्परा तथा दयानन्द की विचारधारा के ठीक विपरीत इस देश में आर्यत्व के स्थान पर हिन्दुत्व की लहर व्याप्त है। आर्य समाज में भी हिन्दुत्व का समर्थन करने वाले बहुत से महानुभाव हैं। यह एक दुःखद परिणाम है। इस देश को आर्यावर्त अथवा आर्य राष्ट्र कहने के बजाय हिन्दुस्तान अथवा हिन्दू राष्ट्र घोषित करने की अवधारणा भी सिर चढ़कर बोलने लगी है जो देश व समाज को वैदिक संस्कृति, वैदिक सभ्यता व वैदिक जीवन मूल्यों से दूर ले जाने की कोशिश है। आर्य समाज में हिन्दुत्व के समर्थकों का यह प्रयास रहता है कि इसकी वेदी से कोई भी भजनोपदेशक या उपदेशक अपने प्रवचन में अवतारवाद, अनेकेश्वरवाद, मूर्तिपूजा, तीर्थाटन, परिक्रमा, श्राद्ध-तर्पण, कांवड़ यात्रा, अमरनाथ, केदारनाथ, बद्रीनाथ यात्रा, फलित ज्योतिष, तन्त्र-मन्त्र, गुरुडम, आस्था-श्रद्धा, विश्वास की मनमानी व्याख्या, पाखण्ड, आडम्बर, अंधविश्वास का खण्डन न कर पाये। आर्य समाजों के प्रधान व मन्त्री इस प्रवृत्ति को बढ़ा रहे हैं। अतः इन हिन्दुत्ववादी तत्वों के कारण कितनी शिथिलता, निष्क्रियता, उदासीनता, दायित्वहीनता आर्य समाज में आ गई है और इसके कारण आर्य समाज की छवि, गरिमा और प्रभाव कितना नष्ट हो रहा है?यह विचारणीय है। शंकराचार्य बनाम शिरडी साईं के विवाद को लेकर आर्य समाज एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता था लेकिन वह खामोश रहा।

यह साधारण अधिवेशन आह्वान करता है कि आर्य समाज में हिन्दुत्ववादी विचारों के बदले आर्यत्व व आर्य राष्ट्र की भावना को, विचारों को प्रोत्साहित करना है तथा ऐसा वातावरण बनाने की पुरजोर कोशिश यह सभा करेगी कि आर्यत्व के मूल्यों के आधार पर समाज और राष्ट्र को जागृत किया जाये तथा सभा भारतीय समाज को नव-निर्माण की ओर ले जायेगी। यह सदन प्रस्ताव करता है कि उक्त विषय पर चिन्तन-मनन करने के लिए एक बुद्धिजीवी सम्मेलन का आयोजन जितनी जल्दी हो सके उतनी जल्दी किया जायेगा।

प्रस्ताव संख्या-3

वैदिक काल से ही गो-वंश को अवध्य माना गया है और गोहंता के लिए मृत्यु दण्ड का प्रावधान तक रखा है। अन्य प्राणियों के प्रति भी करुणा का संदेश वेदों में मिलता है क्योंकि वेद शाकाहार का पक्षधर है मांसाहार का नहीं। महर्षि दयानन्द ने 'गोकरुणानिधि' में अन्य उपयोगी प्राणियों की हत्या करने का निषेध करते हुए गाय को इस कारण अधिक महत्त्वपूर्ण माना है क्योंकि वह अन्य प्राणियों की अपेक्षा अधिक उपयोगी है। इसी कारण देश में जब-जब भी गोरक्षा की बात चली है, आन्दोलन व सत्याग्रह हुए हैं तो आर्य समाज अग्रिम पंक्ति में खड़ा हुआ मिला है। सन् 1966 के पश्चात् देश में कोई अन्य चर्चित गोरक्षा आन्दोलन नहीं चला लेकिन गोरक्षा की बात निरन्तर चलती रही है। श्री अटलविहारी वाजपेयी की सरकार ने जनता के आग्रह व दबाव के कारण ही गुमानमल लोढा की अध्यक्षता में गोरक्षा आयोग गठित किया था जिसने अपनी विस्तृत रिपोर्ट दी थी। तब से अब तक यह रिपोर्ट ठण्डे बस्ते में पड़ी है। इस बीच कांग्रेस भी दस साल शासन कर गई लेकिन उसने कुछ नहीं किया। वह भी गोरक्षा में साधक नहीं बाधक ही रही है यह उसके लम्बे शासनकाल से स्वतः सिद्ध है। गोरक्षा का मामला धार्मिक और आध्यात्मिक कम तथा आर्थिक अधिक हैं क्योंकि गोवंश कृषि अर्थशास्त्र का मेरुदण्ड है। गोपालन, कृषि आधारित लघु उद्योग अथवा व्यवसाय है। आयुर्वेद में पंचगव्य का चिकित्सा प्रणाली में विशेष योगदान है। इसी गणित से यज्ञानुष्ठान में गोघृत का महत्त्व है। आध्यात्मिक, नैतिक, सामाजिक, आर्थिक, चिकित्सकीय व पर्यावरणीय किसी भी पक्ष में गोवंश की हत्या हितकारी नहीं है।

सार्वदेशिक सभा का यह साधारण अधिवेशन केन्द्र की भाजपा सरकार से पुरजोर अपील करता है कि गुमानमल लोढा की रिपोर्ट में वांछनीय सुधार करते हुए उसे तुरंत लागू करे। केन्द्र और प्रान्तों में गोरक्षा व पशु रक्षा मंत्रालय अलग से बनें जो पशुपालन व गोपालन, पशुसंवर्द्धन व गोसंवर्द्धन तथा रक्षण व नस्ल सुधार सुनिश्चित करें। केन्द्रीय पशुरक्षा कानून बने जो समूचे देश पर लागू हो। चरागाहों को अवैध कब्जों से मुक्त कराया जाये। पशुशालाओं के कुल व्यय का 80 प्रतिशत व्यय केन्द्रीय व राज्य सरकारें वहन करें। पशु-तस्करी रोकने के पुख्ता इंतजाम हों और इसकी रक्षा सुनिश्चित हो। गोवंश की हत्या करने वाले को आजीवन कारावास की सज़ा हो। वैध-अवैध बूचड़खाने तुरन्त बन्द करें। पंचगव्य आधारित लघु उद्योगों को सस्ती दरों पर जमीन, संसाधन और ऋण उपलब्ध कराये व इसे प्रोत्साहित करे।

आक्सीटोसिस के इंजैक्शनों की खुली बिक्री प्रतिबंधित हो और दुधारू पशुओं पर इनका प्रयोग दण्डनीय अपराध घोषित हो। रेल, ट्रक, हवाई जहाज से माँस निर्यात बन्द हो। पिछली सरकारों की नीति सूअर पालन, मुर्गी पालन, मछली पालन, झींगा पालन, खरगोश पालन की रही है जिससे देश में मांसाहार की प्रवृत्ति बढ़ी है। सरकारें हमेशा ही मांस लॉबी, ट्रैक्टर, वनस्पति घी और रासायनिक उर्वरक लॉबी के दबाव में आकर बूचड़खाने खोलने के लाइसेंस देती रही हैं। ब्रिटिश भारत में केवल चालीस बूचड़खाने थे जो बढ़कर आजाद भारत में दो लाख का आंकड़ा पार कर चुके हैं। इस घातक नीति का परित्याग कर सरकार को पशु पालन और उससे जुड़े कुटीर उद्योगों पर विशेष ध्यान देना चाहिए जिससे बेरोजगारी दूर हो, अर्थव्यवस्था में सुधार हो।

प्रस्ताव संख्या-4

यह ज्ञात तथ्य है कि भारत में रासायनिक उर्वरक, रासायनिक कीट-नाशक व रासायनिक खरपतवार नाशकों का प्रवेश जबरन अमरीकी षड्यन्त्र के तहत सन् 1965 में हुआ था। वैसे अमरीका 1952 से ही हरित क्रान्ति के लिए दबाव डाल रहा था इनका प्रयोग कितना आत्मघाती सिद्ध हो रहा है यह अब किसी से छिपा नहीं है। इनके कारण हमारी उपजाऊ जमीन बांझ होती जा रही है और जमीन से उपलब्ध उत्पाद अन्न, दाल,

thearyasamaj.org

अधिवेशन में सर्वसम्मति से पारित प्रस्ताव

चावल, गन्ना, सब्जी, चारा, फल इतने विषाक्त हो चुके हैं कि इनके प्रयोग से कैंसर, तपेदिक, दमा जैसे अनेक रोग तीव्र गति से फैल रहे हैं। पंजाब में तो जमीन का पानी ही नहीं माँ के स्तनों का दूध भी जहरीला हो गया है। पर्यावरण प्रदूषण और मित्र जीवों को नष्ट करने में भी इन रासायनिक पदार्थों की निर्णायक भूमिका है। इनके कारण पानी का जल स्तर भी निरन्तर गिरता जा रहा है। रासायनिक पदार्थों का आयात भी होता है अत: हर वर्ष उन पर भारी विदेशी मुद्रा खर्च होती है। इन पर भारत सरकार सब्सिडी भी देती है जिसका बड़े पैमाने पर दुरुपयोग हो रहा है। नदियों को, जमीनी पानी को, वायु मण्डल को प्रदूषित करने में रासायनिक पदार्थों की खतरनाक भूमिका को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। जबसे ये पदार्थ भारत में आये हैं तब से असाध्य रोगों का ग्राफ काफी ऊँचा चढ़ गया है और लाखों लोग काल का ग्रास बन चुके हैं। पंजाब का हर तीसरा किसान कैंसर से पीड़ित है। इनके प्रयोग से खेती का लागत मूल्य बढ़ गया है और पानी की खपत भी अधिक होने लगी है।

इन तथ्यों को दृष्टिगत रखते हुए सार्वदेशिक सभा के इस साधारण अधिवेशन की भारत सरकार से पुरजोर माँग है कि तुरन्त प्रभाव से इन रासायनिक पदार्थों का उत्पादन, आयात और प्रयोग प्रतिबंधित करे। इसके ठोस व सुरक्षित विकल्प के रूप में जैविक कृषि उपलब्ध है जिस पर काफी अनुसंधान हो चुका है, विपुल साहित्य लिखा गया है। कम्पोस्ट, नैडेप, गोश्रृंग, समाधि, केंचुआ खाद की देश में अपार सम्भावनाएं हैं जो हमारे कृषि जगत को संजीवनी पान कराने में सक्षम हैं। जैविक कृषि को अपनाने से रोगों का ग्राफ नीचे गिरेगा, विदेशी मुद्रा की बचत होगी, सब्सिडी से मुक्ति मिलेगी, कृषि आधारित कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहन मिलेगा, बेरोजगारी कम होगी, अर्थव्यवस्था में सुधार होगा, मित्र जीवों की सुरक्षा होगी, पर्यावरण प्रदूषण कम होगा, जमीन की उपजाऊ शक्ति बढ़ेगी, पानी की खपत कम होगी, खाद्यान्न स्वास्थ्यवर्द्धक होंगे, किसान का लागत मूल्य कम होगा, नदियां प्रदूषित होने से बचेंगी, माँ का दूध भी जहर नहीं अमृत बनेगा।

प्रस्ताव संख्या – 5

स्वाधीन भारत के संविधान में हिन्दी को राष्ट्र की राजभाषा घोषित किया गया था अर्थात् कहा गया था कि प्रत्येक स्तर पर केन्द्रीय सरकारी कामकाज की भाषा हिन्दी रहेगी। लेकिन एक सोची-समझी साजिश के तहत अंग्रेजी को कुछ वर्षों के लिए बतौर सहायक भाषा अपनाने की मंजूरी संसद से ले ली गई। यह अवधि वर्षों पूर्व समाप्त हो चुकी है लेकिन फिर भी अंग्रेजी को प्रोत्साहित व हिन्दी के प्रयोग को हतोत्साहित किया जा रहा है। निचले स्तर पर पब्लिक स्कूलों के माध्यम से तथा उच्च स्तर पर प्राइवेट संस्थानों व विश्वविद्यालयों में तथा डॉक्टरी व इंजीनियरिंग आदि विषयों में शिक्षा का माध्यम अंग्रजी है। अदालतें विशेषत: हाईकोर्ट व सुप्रीम कोर्ट की भाषा भी अंग्रेजी है। दक्षिण भारत व पूर्वोत्तर भारत के अधिकांश प्रदेश अंग्रेजी के पक्षधर हैं, पंजाब पंजाबी का और कश्मीर उर्दू का पक्षधर है जिसके राजनीतिक व साम्प्रदायिक कारण अधिक हैं। हिन्दी पूरे भारत में बोली व समझी जाती है। जब दक्षिण या पूर्वोत्तर भारत का निवासी उत्तर में आता है तो हिन्दी बोलता व समझता है, भाषा को लेकर कोई कठिनाई उसे नहीं होती। इसी आधार पर हिन्दी को राजभाषा घोषित किया गया था। राष्ट्रभाषा का सम्मान भी उसे इसी कारण प्राप्त है क्योंकि देश के अधिसंख्यक लोग उसे व्यवहार में अपनाते हैं। हिन्दी अधिसंख्यक लोगों व प्रदेशों की मातृभाषा भी है। यहाँ तक कि नेपाल, ब्रह्म, पाकिस्तान और बांग्लादेश में भी उसे आसानी से समझा जाता है। इन्हीं बातों को दृष्टिगत रखते हुए ऋषिवर दयानन्द ने गुजराती होते हुए भी हिन्दी की पैरवी राष्ट्र भाषा के रूप में की, अपना साहित्य हिन्दी में रचा, प्रचार के रूप में हिन्दी को अपनाया। यही दृष्टिकोण उस समय बंगाल के बुद्धिजीवियों का भी था। हिन्दी को राष्ट्रीय एकता का प्रतीक मानते हुए ही स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान इसे राष्ट्रभाषा बनाने का फैसला ले लिया गया था और कुछेक अपवादों को छोड़कर हिन्दीतर प्रदेशों के नेताओं का भी इसे समर्थन प्राप्त था। हर राष्ट्र की अपनी राष्ट्रभाषा और राजभाषा एक है फिर भारत में ऐसा व्यवहार में क्यों नहीं है?

सार्वदेशिक सभा का यह साधारण अधिवेशन केन्द्र सरकार से अपील करता है कि संविधान ने हिन्दी को जो राजभाषा घोषित किया है उसके अनुरूप ही उसे गरिमा, प्रतिष्ठा, महत्त्व और वरीयता प्राप्त हो। हाईकोर्ट स्तर तक की अदालतों में हिन्दी को अपनाया जाए और सभी प्रान्तीय भाषाओं को भी उन राज्यों में उसकी गरिमा, प्रतिष्ठा, महत्त्व व वरीयता में साथ ही केन्द्र में भी हिन्दी के साथ प्रान्तीय भाषाओं में पत्राचार के लिए विशेष विभाग बनें। देश में मात्र देशीय भाषाओं में पढ़ाई-लिखाई के साथ हर काम-काज हिन्दी और प्रान्तीय भाषाओं में ही होवे ऐसा सुनिश्चित करें। अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के हित अवरुद्ध संरक्षित रहें लेकिन ये भाषाएं हिन्दी के निवास में बाधक नहीं साधक बनें यह भी सुनिश्चित हो। दूतावासों के माध्यम से विदेशों में हिन्दी का विकास हो और संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी को मान्यता प्राप्त हो इस दिशा में भी केन्द्र सरकार उचित कदम उठाये। विदेशों में हर वर्ष हिन्दी महासम्मेलन आयोजित हों इसकी भी कारगर योजना केन्द्र सरकार को बनानी चाहिए। हिन्दी भारत को ही नहीं विश्व को भी जोड़ने वाली भाषा बने ऐसी नीति बनानी चाहिए। प्रवासी भारतीय इसमें महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

प्रस्ताव संख्या – 6

जब से सार्वदेशिक सभा में हमारा प्रवेश हुआ है तब से आर्य जगत् में सप्तक्रांति के मुद्दों का शंखनाद जोरदार तरीके से हम अपील के रूप में करते आ रहे हैं। प्रारम्भ से ही आर्य समाज ने अपने लोक सम्पर्क अभियान को दृढ़ तथा व्यापक बनाने के लिए सामाजिक, राष्ट्रीय व आर्थिक मुद्दों को अपना कर अपनी गरिमा, सामर्थ्य और प्रभाव को बढ़ाया है। पिछले चालीस-पचास वर्ष से इसके प्रति उदासीनता दिखाई जा रही है और इसी का परिणाम है कि आर्य समाज चारदीवारी में सिमट गया है। आर्य समाज ने यदि अपनी पूर्व गरिमा को प्राप्त करना है तो उसे अपना लोक सम्पर्क अभ्यिान पुनर्जीवित करना होगा, सक्रिय और मजबूत करना होगा। सप्तक्रांति के जो सात मुद्दे हैं- साम्प्रदायिकता, जातिवाद, भ्रष्टाचार, नशाखोरी, शोषण, पाखण्ड व नारी उत्पीड़न आदि के वस्तुत: ऐसे मुद्दे हैं जो एक साथ आध्यात्मिक, धार्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय, आर्थिक, शैक्षणिक और पर्यावरणीय पक्षों का स्पर्श करते हैं, उनकी गहराई में उतर कर समाधान निकालने का प्रयास करते हैं। इन सात मुद्दों पर यदि आर्य समाज गहन चिन्तन-मनन करें और आन्दोलित हो तो पुन: उसकी कीर्ति ध्वजा दिग-दिगांत में फहराई जा सकती है।

सार्वदेशिक सभा का यह साधारण अधिवेशन समूचे आर्य जगत् से अपील करता है कि आपस के सभी विवादों को दरकिनार कर साझा मंच बनायें और सप्तक्रांति के मुद्दों पर काम करते हुए आर्य समाज की लोकप्रियता व प्रतिष्ठा को बहाल कराने का संकल्प लें। इन मुद्दों को अपनाकर आर्य समाज किसी भी प्रतिस्पर्धी संस्था को राष्ट्रीय फलक पर कड़ी व निर्णायक टक्कर दे सकेगा। वैदिक धर्म, हमारी परम्पराएँ और इतिहास, हमारी नियति और जीवन मूल्य सप्तक्रांति के अनुरूप रहे हैं अत: आर्य समाज विश्वसनीयता, पारदर्शिता, तटस्थता और ईमानदारी का वहन करते हुए इस सामाजिक क्रांति का पथ प्रशस्त करने में पूर्णतया सक्षम और समर्थ हैं। अत: राष्ट्रीय स्तर पर इन मुद्दों पर विचार-मंथन करने के लिए तीन दिवसीय आर्य महासम्मेलन भी आयोजित किया जा सकता है।

प्रस्ताव संख्या – 7

भारत मूलत: अध्यात्मवादी और धार्मिक देश रहा है जहां का एक आम नागरिक निर्विघ्न सात्विक जीवन जीते हुए स्वतन्त्रतापर्वूक अपने धर्मानुष्ठान सम्पन्न कर सकता है। सिवाय भारत के किसी भी अन्य देश में कर्मयोग, ज्ञानयोग, भक्तियोग, राजयोग, ध्यान योग जैसे शब्द सुनने को नहीं मिलते थे। त्रैतवाद, पुनर्जन्म, कर्मफल पर जितना मौलिक चिन्तन यहां हुआ है अन्यत्र कहीं नहीं हुआ। पुरुषार्थ चतुष्टय अर्थात् धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की जितनी विवेचना और साधना यहाँ हुई है अन्यत्र कहीं नहीं हुई। यम-नियम पर आधारित जैसा आदर्श जीवन यहां जिया गया है अन्यत्र कहीं नहीं जिया गया। ब्रह्मचर्य, सदाचार और परोपकार को जितना महत्व यहां दिया गया है अन्यत्र कहीं नहीं दिया गया। इस देश का दुर्भाग्य है कि वह इस देव-निधि से आज सम्पन्न नहीं विपन्न है, वंचित है, खाली है। इसके अनेक आन्तरिक और बाह्य कारण रहे हैं। महाभारत युद्ध में भारत का जो पतन हुआ उससे वह आज तक नहीं उबर सका है। विदेशी आक्रान्ताओं के कारण भी भारत का निरन्तर पतन होता रहा है। अपवाद रूप में कुछ कालखण्ड आदर्श रहे लेकिन अल्पजीवी रहे। प्राचीन भारत आज केवल प्राचीन साहित्य में जीवित है। उसे जाग्रत और प्राणवान् बनाने के स्वप्न कुछ समाज सुधारकों ने अवश्य संजोये लेकिन उन्हें साकार नहीं कर पाये।

स्वाधीन भारत के गत 67 वर्ष इस दृष्टि से निराशाजनक ही माने जायेंगे कि यहां अपराधों का ग्राफ निरन्तर ऊँचा उठता गया है। लोकसभा के इस चुनाव में एक समाघोष गूंजा - 'मोदी सरकार आयेगी, अच्छे दिन लायेगी।' मोदी सरकार तो आ गई लेकिन अच्छे दिनों की शुरुआत क्या अपराधों के ग्राफ नीचे गिरने के साथ हो सकेगी?क्या मोदी सरकार प्रान्तीय सरकारों के साथ तालमेल बैठाकर अपराधों के विरुद्ध निर्णायक संघर्ष कर पायेगी?

जब तक नागरिकों को रोजगार, शिक्षा, चिकित्सा, सुरक्षा, न्याय, स्वाभिमानपूर्ण जीने

thearyasamaj.org

अधिवेशन में सर्वसम्मति से पारित प्रस्ताव

व समानता के मौलिक अधिकार नहीं मिलेंगे तब तक अपराधों का ग्राफ नीचे गिरना क्या सम्भव है? क्या मोदी सरकार इस दिशा में सार्थक पहल कर पायेगी?

आर्य समाज आशावादी संस्था है अत: प्रयोगवादी होने के साथ-साथ सम्भावनाओं की तलाश में तथा पुरुषार्थ में विश्वास रखती है। इसी आधार पर वह केन्द्र सरकार से पुरजोर अपील करती है कि देश की समस्त सामाजिक व धार्मिक संस्थाओं का सांझा मंच तैयार करने में सहयोग की भूमिका अपनाये तथा बढ़ते अपराधों पर शिकंजा कस सके। क्योंकि देश की पुलिस व प्रांतीय सरकार अकेले इस मोर्चे पर बार-बार विफल होती दिखती रही हैं। राजनीतिक हस्तक्षेप और आर्थिक भ्रष्टाचार के कारण ही ऐसा प्राय: होता रहा है। यह सदन सरकार से मांग करता है कि देश में ब्रह्मचर्य, सदाचार, परोपकार, सेवाभाव रखने वाली शिक्षा पद्धति को लागू करने में जितनी जल्दी हो सके उतनी जल्दी पहल करे और भारतीय सांस्कृतिक परम्परा की रक्षा करें। ताकि समाज एक स्वच्छ समाज के रूप में अर्थात् भ्रष्टाचारमुक्त, अपराधमुक्त समाज के रूप में बदल सके।

अभिनन्दन एवं छात्रवृत्ति प्रदान समारोह

कार्यक्रम

दिनांक	:	12 अक्टूबर, 2014 को प्रात: 8 बजे से 1 बजे तक
स्थान	:	119 गुरुकुल गौतमनगर, नई दिल्ली-49
अध्यक्षता	:	स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती (आचार्य गुरुकुल गौतमनगर, दिल्ली)
उद्घाटन	:	डॉ. योगानन्द शास्त्री पूर्व विधानसभा अध्यक्ष दिल्ली
विशिष्ट अतिथि	:	श्री रामस्वरूप आर्य (प्रधान, नार्दन अमेरिकन जाट चैरिटी, अमेरिका), श्री केशव तिवारी (अमस्टरडैम, हॉलैण्ड), श्री सत्यप्रकाश एवं श्रीमती सुशीला बलदेव (सूरीनाम), चौधरी जयभगवान जागलान (यू. एस. ए.), चौधरी देवदत्त डबास (अध्यक्ष, मानव सेवा प्रतिष्ठान, यू. एस. ए.), श्री अमर रामसेवक (यू. एस. ए.)।

अभिनन्दन

स्वामी चन्द्रवेश जी (आचार्य, स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ टिटौली, रोहतक, हरियाणा) को स्व. श्री रामपत आर्य इसमाइला स्मृति सम्मान से।

श्री चन्द्रभूषण शास्त्री (अधिष्ठाता, गुरुकुल पौंधा, देहरादून) को स्व. श्री मास्टर रतन सिं हजी (सुलतानपुर डबास) दिल्ली स्मृति सम्मान से।

डॉ. कुमारी शकुन्तला (पूर्व प्राचार्या, कन्या गुरुकुल खानपुर, सोनीपत हरियाणा) को श्रीमती लक्ष्मीदेवी नोलथा, पानीपत, हरियाणा स्मृति सम्मान से।

डॉ. अमिता आर्या (कन्या गुरुकुल चोटीपुरा, मुरादाबाद, उ. प्र.) को स्व. श्रीमती शीलवती देवी बल्लभगढ़, भरतपुर (राज.) स्मृति सम्मान से।

आचार्य वेदव्रत (श्रुति विज्ञान आचार्यकुलम्, छपरा, शाहबाद, हरियाणा) को स्व. श्री पं. ऋषि बलदेव तिवारी जी हॉलैण्ड स्मृति सम्मान से सम्मानित किया जायेगा।

वक्तागण :- स्वामी आर्यवेश जी (प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा), डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी (ढम. डी. यू., रोहतक), प्रवीण कुमार आर्या (चेयरमैन फोरसाइट, दिल्ली), श्री जसवीर सिंह मलिक (सम्पादक जाट रत्न), पं. देवानन्द भगेलु (हॉलैण्ड), श्री कैलाश गहलौत (एडवोकेट सुप्रीम कोर्ट), श्री विद्यामित्र ठुकराल जी (दिल्ली), श्री मनोज मिश्रा (प्रिंसिपल रा. आ. व. मा. वि., सराय ख्वाजा, फरीदाबाद), श्री विनय आर्य (दिल्ली), चौधरी जसवन्त सिंह देशवाल (झज्जर, हरियाणा), श्री रणवीर शास्त्री (बवाना), चतर सिंह नागर (दिल्ली)।

आशीर्वाद : स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी (उ. प्र.), डॉ. धर्मपाल जी (भू. पू. कुलपति, गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार)

प्रीतिभोज : प्रदीप शास्त्री जी के निर्देशन में दोपहर 1 बजे से स्व. कवर किशन गुप्ता, नरेला मण्डी की स्मृति में उनके सुपुत्र विकास गुप्ता व नितिन गुप्ता के सौजन्य से।

निवेदक

सोमदेव शास्त्री	हरवीर शास्त्री	डॉ. कंवरसिंह शास्त्री	चन्द्रदेव शास्त्री	रामपाल शास्त्री
प्रधान	उपप्रधान	महामन्त्री	मंत्री	कार्यकर्ता प्रधान

सावधान ! **सावधान !!** **सावधान !!!**

सेवा में,

समस्त भारतवर्ष की आर्यसमाजों/आर्य संस्थाओं एवम् आर्य भाइयों के लिए आवश्यक सन्देश

विषय : क्या आप 100% शुद्ध हवन सामग्री का प्रयोग करते हैं?

आदरणीय महोदय,

क्या आप प्रातःकाल एवम् सायंकाल अथवा साप्ताहिक यज्ञ अपने घर अथवा अपने आर्यसमाज मन्दिर में करते हैं? यदि "हाँ" तो यज्ञ करने से पहले जरा एक दृष्टि ध्यान से, आप जो हवन सामग्री प्रयुक्त करते हैं, उस पर डाल लीजिए। कहीं यह 'घटिया' हवन सामग्री तो नहीं अर्थात् मिलावटी, बिना 'आर्य पर्व पद्धति' से तैयार तो नहीं? इस घटिया हवन सामग्री द्वारा यज्ञ करने से लाभ की बजाय हानि ही होती है।

जब आप घी तो 100% शुद्ध प्रयोग करते हैं, जिसका भाव 250/- से 300/- रुपये प्रति किलो है तो फिर हवन सामग्री भी क्यों नहीं 100% शुद्ध ही प्रयोग करते हैं? क्या आप कभी हवन में डालडा घी डालते हैं? यदि नहीं तो फिर 'अत्यधिक घटिया' हवन सामग्री यज्ञ में डालकर क्यों हवन की भी महिमा को गिरा रहे हैं?

अभी पिछले 26 वर्षों में लगभग भारत की 75% आर्यसमाजों में गया तथा देखा कि लगभग सभी आर्य समाजें व आर्यजन सस्ती से सस्ती हवन सामग्री का प्रयोग कर रहे हैं। कई लोगों ने बताया कि उन्हें मालूम ही नहीं है कि असली हवन सामग्री क्या होती है? तथा हम तो कम से कम भाव पर जहां भी मिलती है वहीं से मंगवा लेते हैं।

यदि आप 100% शुद्ध उच्च स्तर की हवन सामग्री प्रयोग करना चाहते हैं तो मैं तैयार करवा देता हूँ यह बाजार में बिक रही हवन सामग्री से महंगी तो अवश्य पड़ेगी परन्तु बनेगी भी तो 'देशी' हवन सामग्री अर्थात् जिस प्रकार 100% शुद्ध देसी घी महंगा होता है उसी प्रकार 100% शुद्ध हवन सामग्री भी महंगी पड़ सकती है। आज हम लोग मंहगाई के युग में जो 14 से 35 रुपये प्रति किलो तक की हवन सामग्री खरीद रहे हैं वह निश्चित रूप से मिलावटी है क्योंकि 'आर्य पर्व-पद्धति' अथवा 'संस्कारविधि' में जो वस्तुएँ लिखी है वे तो बाजार में काफी महंगी हैं।

आप लोग समझदार है तो फिर बिल्कुल निम्न कोटि की घटिया हवन सामग्री क्यों प्रयोग करते चले आ रहे हैं? घटिया हवन सामग्री प्रयोग कर आप अपना धन और समय तो खो ही रहे हैं साथ ही साथ यज्ञ की महिमा को भी गिरा रहे हैं और मन ही मन प्रसन्न हो रहे है कि आ हा ! यज्ञ कर लिया है।

भाइयों और बहनों! और पूरे भारतवर्ष की आर्यसमाजों के मंत्रियों और मन्त्रिणियो ! अब समय आ चुका है कि हमें जाग जाना चाहिए आप लोगों के जागने पर ही यज्ञ का पूरा लाभ आपको मिल सकेगा।

यदि आप लोग मेरा साथ दें तो मैं आप लोगों को वास्तव में वैदिक रीति के अनुसार ताजा जड़ी-बूटियों से तैयार करवाकर उच्च स्तर की 100% शुद्ध देशी हवन सामग्री जिस भाव भी मुझे पड़ेगी, उसी भाव पर अर्थात् 'बिना लाभ बिना हानि' सदैव भेजता रहूँगा। मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि आप लोग मेरा साथ देंगे तथा यज्ञ की गरिमा को बनाए रखेंगे।

धन्यवाद सहित,

नोट : 1. हमारे यहां लोहे, तांबे एवं टीन की नई चादर से विधि अनुसार बने हुए सुन्दर व मजबूत विभिन्न साइजों के हवन-कुण्ड (स्टैण्ड सहित), सर्वश्रेष्ठ गुग्गुल, शुद्ध असली देशी कपूर, असली सफेद/लाल चन्दन पाउडर, असली चन्दन समिधा एवं तांबे के यज्ञपात्र भी उपलब्ध हैं।
2. सभी आर्य सज्जनों से निवेदन है कि वे लगभग जिस भाव की भी हवन सामग्री प्रयोग करना चाहते हैं वह भाव हमें लिखकर भेज दें। हमारे लिए यदि सम्भव हुआ तो उनके लिखे भाव अनुसार ही हम बिल्कुल ताजा व बढ़िया से बढ़िया हवन सामग्री बनाकर भेजने का प्रयास कर देंगे। आदेश के साथ आधा धन अग्रिम मनीआर्डर से भेजें।

भवदीय
देवेन्द्र कुमार आर्य
विदेशों एवं समस्त भारतवर्ष में ख्याति प्राप्त
(सुप्रसिद्ध हवन सामग्री विशेषज्ञ)
हवन सामग्री भण्डार
631/39, औंकार नगर-सी, त्रिनगर, दिल्ली-110035 (भारत)
मों. : 9958279666, 9958220342

thearyasamaj.org

पृष्ठ–6 का शेष

सार्वदेशिक सभा का दो-दिवसीय साधारण अधिवेशन

अधिवेशन से यह स्पष्ट हो गया है कि सारे देश में स्वामी आर्यवेश जी के प्रधान बनाये जाने से खुशी की लहर है। सारे देश से आर्य समाज के अग्रणी संन्यासी, विद्वान, नेता यहाँ विराजमान हैं। आर्य समाज को एक बड़ा आन्दोलन खड़ा करने की आवश्यकता है उन्होंने कहा कि सभी अनर्थों की जड़ शराब है इसे देश से समाप्त करने की जरूरत है। शराब बन्द होने से अधिकांश बुराइयां समाप्त हो जायेंगी। मेरा मानना है कि देश में शराब को लेकर जागरूकता फैलाकर हम एक विशाल आन्दोलन खड़ा करें और आर्य समाज को एक नई पहचान दें।

बेटी बचाओ अभियान की अध्यक्षा **बहन पूनम आर्या** ने अपने सारगर्भित उद्बोधन में कहा कि आर्य समाज के कार्यकर्ताओं को भूतकाल के नीति नियन्ताओं और कर्मठ कार्यकर्ताओं से प्रेरणा लेकर उठकर खड़े होने की आवश्यकता है तथा स्वामी आर्यवेश

जी के नेतृत्व में कुछ कर दिखाने का समय आ गया है। उन्होंने कहा कि महिलाओं को शिक्षित करने और उन्हें आर्य समाज की मुख्यधारा में जोड़ने की महती आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि आज टी. वी. चैनल पर तथा अन्य जगहों पर अन्य मतावलम्बी हमारे सैद्धान्तिक विचारों की आलोचना करते हैं तो हमारे पास जबाव देने के लिए कोई आगे नहीं आता उन्होंने स्वामी अग्निवेश जी की प्रशंसा करते हुए कहा कि सैद्धान्तिक पक्ष को लेकर जब स्वामी जी आवाज उठाते हैं तो आर्यसमाजी सैद्धान्तिक पक्ष को छोड़कर मतभेदों की चर्चा करने लगते हैं उन्होंने कहा कि आपको ध्यान रखना चाहिए कि आर्य समाज की स्थापना का उद्देश्य ही धार्मिक पाखण्डों का नाश करना था। बहन जी ने कहा कि आर्य समाज को पहचान दिलाने के लिए कड़ी मेहनत की आवश्यकता है।

श्री सत्यपाल शास्त्री जी ने हेल्पलाइन प्रारम्भ करने की आवश्यकता पर बल दिया, उनका कहना था कि आर्य समाज से सम्बन्धित समस्त जानकारी एक ही स्थान पर उपलब्ध कराने का मैं प्रयास कर रहा हूँ। आप सब अपने पते तथा गुरुकुलों, आर्य समाजों, विद्वानों, उपदेशकों के पते व पत्रिकाओं के बारे में सारी जानकारी एक ही स्थान पर उपलब्ध कराई जायेगी। इस कार्य में आपका सहयोग अपेक्षित है।

प्रिं. सदाविजय आर्य महाराष्ट्र ने आर्य समाज में युवाओं को लाने पर बल देते हुए कहा कि युवकों को आकर्षित करने के लिए योग शिविरों का आयोजन बड़े स्तर पर किया जाना चाहिए, कार्य शालायें आयोजित कर खेल प्रतियोगिता का आयोजन प्रत्येक जिलें में किया जाना चाहिए तथा उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए विशेष प्रयास किये जाने चाहिए।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष **डॉ. अनिल आर्य** ने अपने उद्बोधन में कहा कि आज सबसे बड़ी आवश्यकता युवाओं को आर्य समाज में लाने के लिए प्रेरित करने की है। उन्हें चरित्रबल की महत्ता के बारे में बताने की आवश्यकता है। सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध एकजुट होकर आन्दोलन करें तथा उसमें युवा शक्ति को भागीदार बनायें। देश के प्रत्येक क्षेत्र में आर्य समाज को अपनी पहचान बढ़ानी होगी। तथा मुख्य व्यक्तियों की सूची बनाकर उन्हें अपने कार्यक्रमों में विशेष रूप से आमन्त्रित करना होगा जिससे आम व्यक्तियों में अच्छा सन्देश जाये। उन्होंने आर्यों से अपील की कि उठो, जागो और सोचो और आगे बढ़ो तथा आर्य समाज को समुन्नत बनाने के लिए एकजुट हो जाओ।

अधिवेशन में पधारे श्री दयाराम काण्डपाल, डॉ. धर्मवीर आर्य, रामसिंह आर्य, श्री गवेन्द्र शास्त्री, स्वामी सच्चिदानन्द जी महाराज, हीरा प्रसाद शास्त्री, चन्द्रपाल शास्त्री, हरि सिंह आर्य, धर्मपाल सिंह एडवोकेट, श्री कमल नारायण आर्य सहित अनेकों गणमान्य व्यक्तियों ने अपने विचारों से तथा विभिन्न प्रस्तावों को प्रस्तुत कर योजनायें बनाने के कार्य में सहयोग प्रदान किया।

इस अवसर पर गुरुकुल प्रभात आश्रम के अध्यक्ष स्वामी विवेकानन्द जी ने विशेष व्यस्तता के कारण आने में असमर्थता प्रकट करते हुए पत्र लिखा तथा अपने प्रतिनिधि के रूप में पत्र लेकर वानप्रस्थी कृष्णमुनि जी को भेजा। उन्होंने सार्वदेशिक सभा को अपना सम्पूर्ण सहयोग प्रदान करने की बात पत्र में लिखी है। स्वामी आर्यवेश जी ने सदन को पत्र पढ़कर सुनाया।

अधिवेशन के समापन सत्र को सम्बोधित करते हुए सभा प्रधान **स्वामी आर्यवेश जी** ने कहा कि यह अधिवेशन आप सबकी उपस्थित में रस्म अदायगी न होकर ठोस, निर्णायक तथा दूरगामी निर्णय लेने में सफल रहा है हम समझते हैं कि आर्य समाज के आन्दोलनात्मक, प्रचारात्मक, रचनात्मक और संगठनात्मक स्वरूप को निखारने के लिए जो योजनायें बनाई गई, जो प्रस्ताव पास किये गये वे निश्चित रूप से आर्य समाज को नई दिशा दिखा सकेंगे व गतिशील बना सकेंगे। यह अधिवेशन आर्य समाज में नये दौर का आगाज सिद्ध होगा और आर्य समाज इससे नई ऊर्जा नई स्फूर्ति और नई क्षमता पैदा करेगा और जिस उद्देश्य को लेकर आर्य समाज की स्थापना महर्षि दयानन्द सरस्वती ने की थी उस महान उद्देश्य को निश्चित रूप से प्राप्त कर सकेगा ऐसा मेरा विश्वास है।

अधिवेशन में पधारे महानुभावों के लिए अत्यन्त सुन्दर भोजन तथा आवास की व्यवस्था की गई थी। प्रतिनिधियों की प्रशंसा के साथ यह अधिवेशन सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। अधिवेशन की सम्पूर्ण व्यवस्था में सक्रिय भूमिका निभाने एवं विशेष सहयोग देने में सर्वश्री डॉ. ओम प्रकाश मान प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, श्री मधुर प्रकाश उपमन्त्री सार्वदेशिक सभा, ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य प्रधान सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, हरियाणा, श्री अमित मान आर्य समाज शालीमार बाग (पश्चिम), आचार्य सोमपाल शास्त्री, डॉ. अनिल आर्य सभा उपप्रधान एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, सभा के सभी कर्मचारियों एवं अन्य विशिष्ट सहयोगियों ने जिस निष्ठा का परिचय दिया इसके लिए उन सभी की भूरि-भूरि प्रशस्ति की गई।

डॉ. ओम प्रकाश मान
प्रधान, दिल्ली आर्य प्रति. सभा

श्री अमित मान
युवा आर्य नेता (डॉ. मान जी के सुपुत्र)

आचार्य सोमपाल शास्त्री
पुरोहित आर्य समाज शालीमार बाग

पूरे आयोजन में इनका विशेष सहयोग रहा

thearyasamaj.org

NDPSo on 26/27 सितम्बर, 2014
प्रकाशन की तिथि : 25 सितम्बर, 2014
वैदिक सार्वदेशिक 25 सितम्बर से 1 अक्टूबर 2014
पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/12-14
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2012-14]

मिलकर चलो, बोलो

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते।।

—ऋ० १०/१९१/२

ऋषिः—संवननः।। देवता—संज्ञानम्।। छन्दः—अनुष्टुप्।।

विनय—हे मनुष्यो! सदा मिलकर चलो, मिलकर आचरण करो, मिलकर बोलो और तुम्हारे मन मिलकर सदा एक निश्चय किया करें। यह दैवी नियम है। देव लोग सदा 'संजानानाः' होकर—समान मन और ज्ञानवाले होकर ही—अपने कार्य—भाग को निबाहते आये हैं। असल में यह मनों द्वारा ज्ञान की एकता ही वास्तविक एकता है। मन की एकता होने पर वचन और कर्म (आचरण) की एकता होने में कुछ देर नहीं लगती। देखो, ये देव लोग सब जगह 'संजानानाः' होकर ही कार्य कर रहे हैं। आधिदैविक जगत् में देखों, अग्नि—वायु आदि देव जगत्—संचालन के लिए इकट्ठे होकर अपने—अपने भाग को ठीक—ठीक कर रहे हैं। अध्यात्म में प्राण—इन्द्रिय आदि देवों को देखो कि ये कैसे संगठित होकर जीवन को चला रहे हैं। पैर में कांटा चुभता है तो त्वचा—प्राण—मन—हाथ आदि सब देव एक क्षण में कैसा सहयोग दिखाते हैं। आधिभौतिक जगत् में भी सब ज्ञानी=देव—पुरुष पुराने काल से लेकर आज तक संगठित होकर ही बडी—बड़ी सफलताएँ प्राप्त करते रहे हैं। 'मिलना' दैवी प्रवृत्ति है; क्षुद्र स्वार्थों को न छोड़ सकना और न मिलना आसुरी है, अतः हे मनुष्यों! तुम मिलो, अपने सैकड़ों क्षुद्र स्वार्थों को छोड़कर एक बड़े समष्टि—स्वार्थ के लिए सदा मिलो। लाखों—करोड़ों के मिलकर काम करने से जो तुम्हें बड़ी भारी सामूहिक सिद्धि मिलेगी, उससे फलतः तुम लाखों—करोड़ों में से प्रत्येक व्यक्ति के भी सब सच्चे स्वार्थ अवश्य सिद्ध होंगे। मिलने में बड़ी भारी शक्ति है। तुम मिलकर चलो, मिलकर करो तो कौन—सा कार्य असाध्य है। तुम मिलकर बोलो तो संसार को हिला दो और मिलकर ध्यान करने में तो अपार—अपार शक्ति है, अतः हे मनुष्यो ! मिलो, मिलो ! सब प्रकार से मिलकर अपने सब अभीष्ट सिद्ध करो।

शब्दार्थ—हे मनुष्यो ! **संगच्छध्वम्**=मिलकर चलो, आचरण करो, **संवदध्वम्**=मिलकर बोलो, और **वः**=तुम्हारे **मनांसि**=मन **संजानताम्**=मिलकर ज्ञान प्राप्त करें, समान ज्ञानवाले हों; **यथा**=जैसेकि **पूर्वे देवाः**=पहले के देव लोग **संजानानाः**=मिलकर जानते हुए, एकज्ञान होते हुए **भागम्**=भजनीय वस्तु की, अपने भाग की **उपासते**=उपासना करते, उपलब्धि करते रहे हैं।

साभार- 'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

प्रतिष्ठा में :—

अवितरण की दशा में लौटाएँ —
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली—110002

श्रावणी महापर्व पर प्रकाशित प्रमाणित जीवन चरित्र

योगेश्वर श्रीकृष्ण

लेखक- स्व. पं. चमूपति एम. ए.

पृष्ठ संख्या-256, मूल्य - 100/- रुपये

पं. चमूपति द्वारा लिखित "योगेश्वर कृष्ण" अनोखा प्रसाद जन साधारण के लिए उपलब्ध है। अप्रतिम विद्वान पं. चमूपति जी ने योगेश्वर कृष्ण का जीवन चरित्र निष्पक्ष एवं प्रमाण सहित लिखा है। यह जीवन चरित्र ज्ञान पिपासु व्यक्तियों के लिए हर प्रकार से पठनीय एवं संग्रहणीय है। यह पुस्तक 23X36 के बड़े साईज पर विलारपुर टी. ए. कागज पर मुद्रित है तथा कम्प्यूटर द्वारा तैयार की गई है। लैमिनेशन कर टाइटल को अत्यन्त आकर्षक बनाया गया है।

अग्रिम आदेश करने पर यह पुस्तक मात्र 50 रुपये में दी जायेगी। अपनी धनराशि "**सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा**" के नाम "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर शीघ्र भेजें। दूरभाष संख्या-011-23274771, 23260985 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

(डाक व्यय तथा पैकिंग खर्च के 25 रुपये अतिरिक्त देने होंगे।)

प्रकाशक : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

।।ओ३म्।।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर—घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

लागत मूल्य 3100/- रुपये

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

भारी छूट पर उपलब्ध

एक लाख रुपये अग्रिम देने वाले महानुभावों का चित्र तथा संक्षिप्त परिचय वेद सैट में प्रकाशित किया जायेगा तथा दस वेद सैट उन्हें निःशुल्क प्रदान किए जायेंगे।

ऋषि निर्वाण दिवस (दीपावली) तक अग्रिम राशि भेजने वालों को दिया जायेगा

मात्र 2100/- रुपये में एक सैट

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। **डाक व्यय 225/- रुपये अलग से देना होगा।** प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी। अपना आदेश '**सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा**' के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

—: प्रकाशक :—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)

सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।